बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष 25 । अंक 5 । दिसम्बर, 2023
ISSN No. 2582-4546
₹ 30

अणुविभा

आपका स्कूल शैक्षिक भ्रमण पर जाने की योजना बना रहा है?
इसे मूल्यपरक, उपलब्धिपरक और यादगार बनाने के लिए प्रस्तुत है...
'बालोदय एजुटूर'
BALODAYA EDUTOUR
सर्वांगीण बाल विकास के प्रति कृतसंकल्पित विद्यालयों को
राजस्थान के मेवाड़ अंचल के शैक्षिक भ्रमण का उत्कृष्ट अवसर
प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण का मौका
कुंभलगढ़
राजसमंद
नाथद्वारा
चित्तौड़गढ़
हल्दीघाटी
उदयपुर
बालोदय एजुटूर की विशेषताएं
राजसमन्द झील के निकट एक पहाड़ी पर प्राकृतिक दृश्यावलियों के बीच 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' में बेस कैम्प
योगा सत्र, चित्र प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी, फिल्म शो, सांस्कृतिक कार्यक्रम
पीस पैलेस में सादगीपूर्ण आवास व सुरुचिपूर्ण भोजन की श्रेष्ठ व्यवस्था
बस सुविधा उपलब्ध
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
अभिषेक कोठारी, संयोजक +917727867624
राजसमंद कार्यालय-
+91 91166 34513 head.office@anuvibha.org
अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
https://anuvibha.org

प्यारे बच्चो,
'बच्चों का देश' का यह रजत जयंती वर्ष है
इस पत्रिका को पढ़ने से आपको कई लाभ होते हैं, जैसे-
किताबें पढ़ने की आदत बनती है,
जीवन के बारे में सही सोच का विकास होता है एवं
स्वयं कुछ लिखने की रुचि बनती है।
इसलिये जब भी 'बच्चों का देश' पढ़ो, पूरा मन लगाकर पढ़ो।

इस माह का विचार यहाँ दिया जा रहा है-

इसे आपको गहराई के साथ समझना है,
और दूसरों के साथ इस पर चर्चा भी करनी है।

धन से अच्छाई
नहीं आती, लेकिन
अच्छाई से धन
अवश्य आता है।

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 25 अंक : 5 दिसम्बर, 2023

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : सुशील कुमार, दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : अविनाश नाहर
महामन्त्री : भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन
प्रकाशन मन्त्री : देवेन्द्र डागलिया
पत्रिका प्रसार संयोजक : सुरेन्द्र नाहटा

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है।
- समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

स्तम्भ

06 सम्पादक की पाती
07 महाप्रज्ञ की कथाएँ
16 सुडोकू
24 आओ पढ़ें : नई किताबें
29 दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो
30 अन्तर ढूँढ़िये
33 व्हाट्सएप कहानी
41 पढ़ो और जीतो, उत्तरमाला
42 कलम और कूँची
44 नन्हा अखबार
46 Science of Living : Jeevan Vigyan
49 किड्स कॉर्नर, जन्मदिन की बधाई

आलेख

08 राज्य पक्षी–7 : हिमालयी मोनाल
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
11 राजा महेन्द्र प्रताप सिंह
डॉ. लता अग्रवाल
26 युद्ध किसी समस्या का....
28 एक हीरे की अनोखी यात्रा
कमल सोगानी
34 मेरा देश : गाँव विशेष–12
शिखर चन्द जैन
38 विश्व विरासत स्थल–3
नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
47 मजेदार होता है पॉपकार्न
डॉ. विनोद गुप्ता

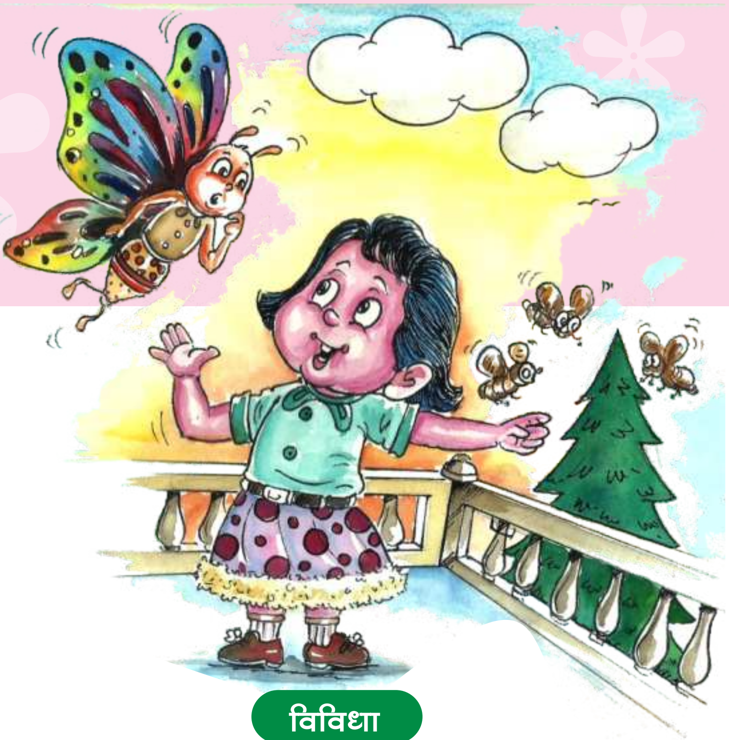

कहानी

09 **बाघ से सामना**
रजनीकान्त शुक्ल

15 **मायरा का सपना**
डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

19 **अनमोल पाठ**
प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश

23 **सलोना ने भरी उड़ान**
वन्दना गुप्ता

31 **आनन्द की खोज**
पूनम पांडे

35 **एकलव्य की एकाग्रता**
सरिता गुप्ता

39 **मेरा खिलौना**
राजेश अरोड़ा

कविता

08 **सब्जी वाला**
नीता अवस्थी

10 **भोली तितली रानी**
भगवती प्रसाद गौतम

10 **हम बगिया के फूल**
उदय मेघवाल 'उदय'

18 **अच्छी सीख**
सुकीर्ति भटनागर

18 **दियासलाई**
डॉ. फहीम अहमद

30 **सर्दी के दोहे**
महेन्द्र कुमार वर्मा

30 **चूहे जी**
विज्ञान व्रत

विविधा

4 **विस्मयकारी भारत–12**
रवि लायटू

17 **वर्ग पहेली**
राधा पालीवाल

21 **बूझो तो जानें**
गोविन्द भारद्वाज

22 **अणुव्रत की बात**
मनोज त्रिवेदी

25 **उलझन कैसी**
राकेश शर्मा राजदीप

33 **दिमागी कसरत**
प्रकाश तातेड़

37 **रंग भरकर देखिये**
चाँद मोहम्मद घोसी

40 **ईसा मसीह के...**
हर प्रसाद रोशन

48 **चित्रकथा**
संकेत गोस्वामी

आवरण चित्रांकन
निर्मल यादव

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

स्कूलों में सर्दियों की छुट्टियाँ शुरू हो गई थी। मेहुल अपनी बहन प्रीति और मम्मी–पापा के साथ दादा के घर आया था। मेहुल के दादा के तीन बेटे हैं और एक बेटी। इन चारों भाई–बहनों के परिवार के काफी सदस्य पहले ही दादा के घर पहुँच चुके थे।

कई वर्षों बाद ऐसा अवसर आया था जब मेहुल और उसके सभी भाई–बहन एक साथ इकट्ठे हुए थे। सभी बच्चे बहुत खुश थे और एक दूसरे के हालचाल जानने में ही उन्हें कई घंटे लग गये थे।

दादा के घर के सामने ही एक छोटा सा पार्क है। जहाँ सभी बच्चों ने पेड़ के नीचे एक जगह ढूँढ़ निकाली जहाँ खेलकूद से थक जाने के बाद सभी घेरा बनाकर बैठ जाते थे।

आज जब सभी बच्चे बातें कर रहे थे तभी मेहुल की चचेरी बहन अवन्ती बोली– ''कुछ ही दिनों में नया साल आने वाला है। क्या सोचा है तुम लोगों ने इस बारे में?'' प्रीति तपाक से बोली– ''नये वर्ष के नये संकल्प, और क्या? हर साल की तरह इस साल भी नये रेजोल्युशन लेंगे।'' मेहुल अपनी बहन को डपटते हुए बोला– ''पिछले साल के रेजोल्युशन तो पहले पूरे कर लो, फिर नये की सोचना।'' मेहुल की बात सुनकर सभी हँस पड़े।

तभी टहलते हुए दादाजी उधर से गुजरे तो बच्चों को देखकर उनके पास चले आये– ''अरे! क्या पंचायत चल रही है बच्चो?'' दादाजी की बात सुनकर बच्चों में सबसे बड़ी राधिका दीदी ने बताया– ''अरे दादाजी, न्यू ईयर की प्लानिंग हो रही है। सब सोच रहे हैं कि नये साल में क्या नया करें?'' दादाजी बोले– ''अपनी बातें जारी रखो, मैं भी सुनता हूँ।'' अजय बोला– ''मैं तो कहता हूँ पिछले साल क्या हुआ, क्या नहीं! इसको किनारे रखो और आगे क्या करना है यह सोचो।''

बच्चों के अलग–अलग सुझाव आते रहे। बच्चों की बातें सुनकर दादाजी बहुत खुश हुए। उन्हें अपनी भावी पीढ़ी को सही राह पर चलता देख गर्व का अनुभव हुआ। चर्चा को एक नया मोड़ देते हुए वे बोले– ''एक दोहा तुम लोगों ने सुना होगा– बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ। लेकिन मैं इसमें थोड़ा सुधार करना चाहता हूँ। जो बीत गया उसे भूलने से पहले हमें सबक जरूर लेना चाहिये ताकि हम भविष्य में पहले की गलती दुबारा नहीं करें।'' दादाजी की बात सुनकर सब सोचने लगे। तभी मौन को तोड़ते हुए मेहुल बोला– ''इसका मतलब तो दादाजी यह हुआ कि हमें यह देखना चाहिये कि यह वर्ष जो बीत रहा है, इसमें हमने क्या–क्या गलतियाँ की और अगले वर्ष उन गलतियों को न करने का संकल्प लें।'' मेहुल की बात सुनकर दादाजी ने उसे गले लगा लिया और बोले– ''अरे हाँ, यही तो मैं कहना चाह रहा था। नये वर्ष में हम पिछले वर्ष की गलतियों को सुधार लें तो हमारा नया वर्ष अपने आप ही सफल हो जायेगा।''

सभी बच्चों ने सहमति में जोरदार तालियाँ बजाई और दादाजी को थैंक्यू भी बोला। राधिका ने कहा– ''दादाजी, कल जब हम सब बच्चे यहाँ बैठेंगे तो इसी बात पर चर्चा करेंगे।'' प्रीति बोली– ''जरूर हम अपनी गलतियों और कमियों को कागज पर लिखेंगे और उन्हें न दोहराने का संकल्प भी लेंगे।''

प्यारे बच्चो, दादाजी ने जो सुझाव दिया है, हम सबके लिये भी बहुत काम का है। आओ, हम भी अपनी कमियों को पहचानें, उनकी सूची बनायें और उन्हें अपने जीवन से निकाल फेंकने का संकल्प लें। नये वर्ष की अग्रिम शुभकामनाएँ।

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

चित्त का निर्माण

दो मछुए मछली पकड़ने गए। तभी तेज वर्षा होने लगी। वे अपना काम नहीं कर सके, इसलिए एक बगीचे में चले आए। वर्षा तेज हो गयी। बाहर जा नहीं सकते थे। उन्होंने माली से कहा– ''थोड़ा स्थान दे दो।''

माली ने स्थान दे दिया। मछुए सो गए। आसपास में फूल बिखरे पड़े थे। मछुए लेट गए, परन्तु नींद नहीं आ रही थी। थोड़ी देर बाद उठकर बैठ गए और बोले– ''नींद नहीं आ रही है क्योंकि कहीं से दुर्गन्ध आ रही है।'' परस्पर बातचीत की। फिर माली से कहा– ''हमें नींद नहीं आ रही है।'' माली ने कहा– ''मकान तो ठीक है। पानी के छींटे भी अन्दर नहीं आ रहे हैं। शान्ति से सो जाओ।''

मछुए लेट गए, परन्तु कुछ देर बाद पुनः उठ बैठे और कहा– ''कहीं से दुर्गन्ध आ रही है, इसलिए नींद नहीं आती है।'' माली ने कहा– ''दुर्गन्ध तो कुछ भी नहीं है, इधर तो पुष्प पड़े हैं, खुशबू आ रही है।'' माली समझदार था। उसने कहा– ''तुम लोगों के पास में क्या सामान है?'' उन्होंने कहा– ''मछली रखने की टोकरियाँ हैं।'' माली ने कहा– ''तुम्हें नींद ऐसे नहीं आएगी। इन टोकरियों को अपने–अपने मुँह पर डाल लो, नींद आ जाएगी।'' मछुआरों ने ऐसा ही किया। उन्हें नींद आ गयी।

कथाबोध : जिस व्यक्ति में जिस प्रकार के चित्त का निर्माण हो जाता है, वहीं उनके लिए सुख का विषय बन जाता है। इसीलिए मछुआरों को पुष्प की खुशबू भी दुर्गन्ध दे रही थी और मछली की गंध उन्हें सुगन्ध जैसी प्रतीत होती है।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	: 350 रु.
त्रैवार्षिक	: 900 रु.
पंचवार्षिक	: 1500 रु.
दस वर्ष	: 3000 रु.
पंद्रह वर्ष	: 7500 रु.

विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

बच्चों का देश

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन

ANUVRAT VISHVA BHARTI SOCIETY
IDBI Bank BRANCH Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC : IBKL0000104

UPI	RAZOR PAY https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634515

हिन्दी नाम - हिमालयी मोनाल
अँग्रेजी नाम - Monal
वैज्ञानिक नाम -Lophophorus impejanus
फोटो - शार्दुल देशमुख

उत्तराखंड का राज्य पक्षी हिमालयी मोनाल

मोनाल चमकीले लाल, हरे, पीले, बैंगनी रंगों का एक सुन्दर पक्षी है। हिमालय पर्वत के ऊँचे बर्फीले भागों में पाया जात है इसे नीलमोर भी कहते हैं। जंगलों तथा झाड़ियों में रहने वाला यह शर्मीला पक्षी दिनभर अपनी शक्तिशाली चोंच से जमीन खुरचता रहता है। मोर के समान कलगीदार मोनाल में नर एवं मादा की संरचना में काफी अन्तर होता है। मादा नर से छोटी और कम सुन्दर होती है।

नर मोनाल सिर से लेकर पूँछ के अन्त तक 70–75 सेन्टीमीटर लम्बा होता है। इसका सिर चमकीला हरा तथा इस पर हरे रंग के पंखों वाली कलगी होती है। इसकी गोल व कत्थई रंग की आँखों के चारों ओर नीलापन लिए हरे रंग की त्वचा होती है। इसकी मादा की लम्बाई 60–65 सेन्टीमीटर होती है। इसके शरीर के रंग हल्के तथा फीके होते हैं जिनमें कोई चमक नहीं होती।

डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
जयपुर (राजस्थान)

सब्जी वाला

नीता अवस्थी
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

सब्जी वाला भैया आया।
तरह-तरह की सब्जी लाया।

आलू, गोभी और टमाटर,
बैंगन, पलवल, खीरा, गाजर।
नींबू, मिर्ची, मूली, अदरक,
पालक और पुदीना लाया।...

बाबा हम लौकी खाएँगे,
खाकर लम्बे हो जाएँगे।
होती है यह अति गुणकारी,
मास्टर जी ने है बतलाया।...

कद्दू, भिंडी हमको भाते,
बड़े प्रेम से इनको खाते।
अब खाएँगे हरी सब्जियाँ,
इसका राज समझ में आया।...

आलू कटहल कम खाएँगे,
हरी सब्जियाँ नित खाएँगे।
सब्जी में है बहुत विटामिन,
होगी स्वस्थ निरोगी काया।...

बाघ से सामना

उत्तराखंड के टेहरी गढवाल के गाँव कोटाल में शाम को रुकमा देवी गौशाला से दूध निकालने गई हुई थीं। घर में उनकी बड़ी बेटी आशा, बेटा सुभाष और हरीश था। सुभाष घर के बाहर के हिस्से में था और हरीश व आशा घर के अन्दर थे। तभी उनके घर के बाहर बैठा उनका पालतू कुत्ता अचानक बहुत तेजी से भौंकने लगा। उसके भौंकने के अन्दाज से लग रहा था कि उसने किसी बहुत बड़े खतरे को देख लिया है।

धीरे–धीरे उसका यह भौंकना तेज हो रहा था और तभी यकायक उसके भौंकने के अन्दाज में दयनीयता आ गई, मानो उस पर किसी ने हमला कर दिया हो। यह सुनकर सुभाष दौड़कर बाहर आया। वह जैसे ही बाहर पहुँचा तो देखते ही उसके होश उड़ गए। उसने देखा कि बाहर उसके कुत्ते पर गुर्राहट के साथ छत से उतरकर हमला करने वाला एक बाघ था। सुभाष ने कुत्ते को बचाने के लिए उस बाघ को ललकारा। उधर कुत्ते ने जब इस मुसीबत के समय मालिक को आया हुआ देखा तो वह दौड़ता हुआ सुभाष के करीब आ गया। अब बाघ ने अपने और शिकार के बीच बाधा बनने आए सुभाष को ही अपने निशाने पर कर लिया। उधर कुत्ते और भाई के शोरगुल की आवाजों को सुनकर छोटा भाई हरीश भी बाहर आ गया। इधर बाघ सुभाष पर हमला करने की तैयारी कर रहा था। हरीश ने तुरन्त स्थितियों को देखा और तीन काम तेजी से किए। सबसे पहले उसने अपने बड़े भाई सुभाष को घर के अन्दर की ओर धक्का दे दिया और कुत्ते को अपने हाथों में उठाया और अन्दर की ओर दौड़ लगा दी।

अपने दोनों शिकारों को यूँ अपने सामने से ले जाते देखकर अब बाघ ने हरीश को अपने निशाने पर ले लिया। उसने छलाँग लगाई और वह हरीश के बिलकुल करीब जा पहुँचा। उसने अपना पंजा बढ़ाकर झपट्टा मारा। इस बीच हरीश आगे बढ़ गया तो हरीश की कमीज उसके पंजे में फँस गई। वह चर्र करती हुई पंजें के साथ नीचे तक फट गई।

मगर तब तक हरीश आगे बढ़ चुका था। इधर बाघ भी शिकार हाथ से निकल जाने और अपना वार खाली चले जाने से खूँखार हो चुका था। क्रोध में वह जोर से गुर्राया इससे पहले कि बाघ पलट कर दूसरा हमला करे। हरीश ने अपने हाथ में पकड़े कुत्ते को सामने बने

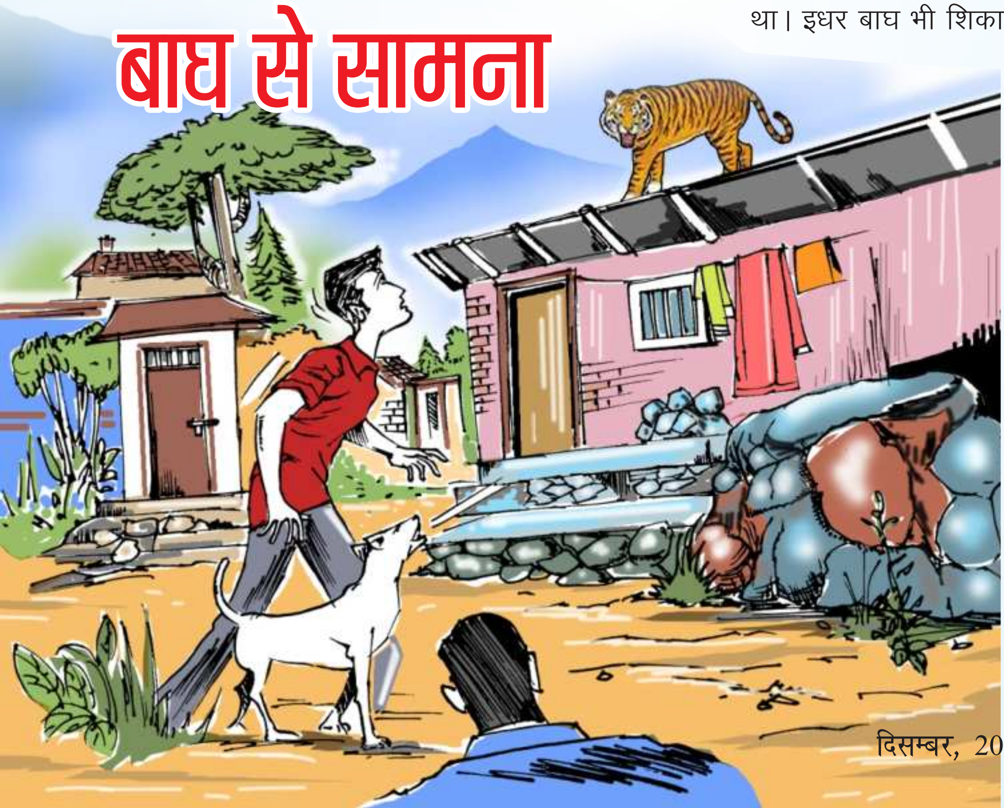

देखें पृष्ठ 13...

भोली तितली रानी

नन्ही कलियों से बतियाती,
फिर फूलों पर जा मँडराती,
भर लेती मुख में यह कैसे
मनमर्जी से मधुर खुराक।
तितली है कुछ तो चालाक।...

नटखट नीलू इसे बुलाए,
दादी भी दिल से दुलराए,
मगर छकाती खूब सभी को
कर-कर कैसी हँसी-मजाक।...

पंख पसारे उड़ती-फिरती,
छूते ही लो, तुरत सिहरती,
किन्तु लुभाती जग को इसकी
सुन्दर सतरंगी पोशाक।...

कितनी भोली तितली रानी,
होती है फिर भी हैरानी,
पकड़ न पाता कोई इसको
क्या मुरलीधर, क्या मुश्ताक।...

मन करता बस नाचूँ-गाऊँ,
इस रानी को दोस्त बनाऊँ,
अगर यही सच हो जाए तो
खूब करूँ बातें बेबाक।
तितली है कुछ तो चालाक।...

भगवती प्रसाद गौतम
कोटा (राजस्थान)

हम बगिया के फूल

हम है नन्हे मुन्ने बालक,
जाते नित स्कूल।
अनुशासन का पालन करना,
हरदम हमें कबूल।

शिक्षक जी शाला में हमको,
जो भी पाठ पढ़ाते।
घर पर आकर उसे दुबारा,
फिर से हम दुहराते।।
इसी तरह हम करें पढ़ाई,
अपना यही उसूल।...

मोबाइल से रखते दूरी,
खेल नित्य ही खेलें।
करते काम समय पर सारे,
कभी न झंझट झेलें।।
यही हमारी दिनचर्या है,
इसमें हम मशगूल।...

बाल पत्रिकाएँ भी पढ़ते,
मिले समय जब खाली।
नहीं कभी भी झगड़ा करते,
बाँटें बस खुशहाली।।
सबको ही मुस्कान लुटाएँ,
हम बगिया के फूल।...

उदय मेघवाल 'उदय'
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

कबूल = स्वीकार, उसूल = नियम, मशगूल = तल्लीन

देशभक्त दानवीर

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह

बच्चो, हमें आजादी दिलाने तथा स्वतन्त्र भारत का नया स्वरूप निर्मित करने में कई महान विभूतियों ने अपना तन–मन यहाँ तक कि धन भी अर्पण कर दिया। उनमें एक है राजा महेन्द्र प्रतापसिंह।

सामान्य परिचय

1 दिसम्बर 1886 को जन्में राजा महेन्द्र प्रताप सिंह एक पत्रकार, लेखक, स्वतन्त्रता सेनानी, समाज सुधारक एवं दानवीर, ऐसे अनेक रूप में हमारे सामने आते हैं। इतना ही नहीं, वे आर्यन पेशवा के नाम से भी जाने जाते थे। उनके पिता का नाम राजा घनश्याम सिंह था जो मुरसान के राजा थे किन्तु हाथरस के राजा हरनारायणसिंह के कोई सन्तान नहीं होने से उन्होंने मुरसान के राजा घनश्याम सिंह के तीसरे पुत्र महेन्द्र प्रताप को गोद ले लिया। इस प्रकार महेन्द्र हाथरस राज्य के उत्तराधिकारी बने।

उनका बचपन बड़ी सुख सुविधाओं में एक राजकुमार की तरह व्यतीत हुआ। अलीगढ़ में सर सैयद खाँ द्वारा स्थापित स्कूल में बी. ए. तक शिक्षा ली लेकिन बी. ए. की परीक्षा में पारिवारिक संकटों के कारण बैठ न सके। वे अपने क्षेत्र में सबसे अधिक पढ़े–लिखे माने जाते थे।

जातिवाद का विरोध

वे जातिगत छुआछूत के घोर विरोधी थे जबकि वह समय कट्टर जातिवाद का था। समाज में ऊँच–नीच की भावना प्रबल थी। इसी कारण उस समय निम्न जाति के माने जाने वाली लोगों को पंडितों द्वारा मन्दिरों में प्रवेश नहीं दिया जाता था। राजा महेंद्र सिंह द्वारा एक वृद्ध महिला की सहायता करने पर जब उसने यह कहा कि– "मन्दिर में कृष्ण की मूर्ति कैसी है, मुझे नहीं पता क्योंकि मैंने कभी उन्हें देखा ही नहीं किन्तु आज तुम्हें देखा तो लगता है मैंने साक्षात् भगवान के दर्शन कर लिये।" तब राजा महेन्द्र प्रताप ने पंडितों को फटकार लगाते हुए कहा– "ईश्वर जाति नहीं, भक्ति देखते हैं। मेरी प्रजा की झोपड़ी ही मेरा मन्दिर है। इसी में मुझे शिव, राम और कृष्ण दिखाई देते हैं।"

उच्च शिक्षा के पक्षधर

उनके अनुसार शिक्षा ही जीवन को बेहतर बना सकती है। एक बार उन्होंने अपनी माँ से कहा– "माँ! हमारे देश को डॉक्टर, इंजिनियर, वैज्ञानिक की आवश्यकता है ताकि देश की प्रगति हो अतः मैं अपनी हवेली का कुछ हिस्सा पॉलिटेक्निक कॉलेज को देना चाहता हूँ। तब माँ, पत्नी और ससुर द्वारा इस तरह पैतृक सम्पत्ति लुटाने तथा कॉलेज के नाम पर राज महल में हर जाति और धर्म के लोगों के आने पर नाराजगी व्यक्त की किन्तु राजा साहब ने यह कहते हुए अपनी आधी हवेली पॉलिटेक्निक कॉलेज को दान कर दी कि शिक्षा कब से धर्म और जाति देखने लगी।

समाजसेवी व दानवीर

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह पूरी तरह से धर्म–निरपेक्ष तो थे ही साथ ही हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षधर भी थे। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के विस्तार के लिए अपनी 3 एकड़ जमीन दान में दे दी। इसके अलावा 'वृन्दावन' में 80 एकड़ का एक बाग था जिसे 'आर्य प्रतिनिधि सभा' को दान में दे दिया था जिसमें 'आर्य समाज गुरुकुल' और 'राष्ट्रीय विश्वविद्यालय' निर्मित हुआ। इतना ही नहीं, आर्थिक संकट आने पर उन्होंने अपने पाँच गाँव भी बेच दिए। उनका मानना था कि यह जीवन देश के लिए काम आ जाए तो यह मेरा सौभाग्य होगा। उन्होंने समाज कल्याण हेतु कई संस्थाएँ खोली, उन्होंने कलकत्ता में स्वदेशी आन्दोलन में हिस्सा लिया। विदेशी वस्तुओं का न केवल विरोध किया अपितु स्वदेशी वस्तुओं और स्थानीय कारीगरों के साथ मिलकर छोटे–छोटे उद्योगों को बढ़ावा दिया।

विविध सेवा कार्य

राजा साहब अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति प्रेम विद्यालय को दान करना चाहते थे परन्तु महामना मालवीय जी ने समझाया कि यह पुश्तैनी धरोहर है इस तरह आप सब दान नहीं कर सकते। तब भी राजा साहब ने अपनी आधी सम्पत्ति (पाँच गाँव और दो महल) एक विद्यालय को दान कर दिये। फिर जब उन्हें असहाय माताओं के लिए एक सामूहिक निवास की आवश्यकता महसूस हुई तो उन्होंने अपने ही द्वारा विद्यालय को दान दी गई सम्पत्ति में से 10 हजार रुपये देकर (केलाकुंज) पुनः खरीदा और वहाँ माताओं के रहने की व्यवस्था की। एक ट्रस्ट बनाकर सन 1909 में विद्यालय के लिए सम्पत्ति की रजिस्ट्री करा दी गई।

स्वतन्त्रता संग्राम में भागीदारी

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह ने ही सबसे पहले 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया। सुभाष चन्द्र बोस की 'आजाद हिन्द फौज' बाद में बनी। उनकी आजाद हिन्द फौज ने अफगानिस्तान के साथ मिलकर अँग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। भारत को आजाद घोषित कर उन्होंने स्वयं को भारत का प्रथम राष्ट्रपति घोषित किया।

वे जानते थे यदि रूस, जर्मनी और जापान से सहयोग मिल जाय तो वे ब्रिटिश को देश से बाहर कर सकते हैं जिसके लिए उन्होंने बहुत प्रयास किये। वे जापान के राजा और रूस में लेनिन से मिले परन्तु किसी ने कोई सहायता नहीं की। 32 वर्ष तक वे विदेशों में भ्रमण कर लोगों में आजादी की अलख जगाते रहे। जबकि उनके बाप–दादा अँग्रेजों के भक्त थे लेकिन उन्होंने अँग्रेजों के खिलाफ आजादी की जंग छेड़ दी थी।

वे आजाद भारत में लोकसभा के सदस्य भी रहे। 1957 में वे निर्दलीय चुनाव में खड़े हुए और लोगों ने उन्हें अपना प्रतिनिधि बनाया। 1915 में विश्व युद्ध के दौरान बनी भारत की अन्तिम सरकार के अध्यक्ष भी रह चुके थे।

देश के प्रति उनकी कर्त्तव्य भावना को देखते हुए महात्मा गांधी ने उनके बारे में कहा था– "राजा महेन्द्र प्रताप सिंह के प्रति मेरे हृदय में आदर भाव है, उनकी देशभक्ति सराहनीय है।"

पुरस्कार

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह को नोबल पुरस्कार हेतु नामांकित किया गया था। इसके साथ ही उन्हें 'आर्डर ऑफ द रेड ईगल' की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्हें कलकत्ता में राजर्षि के सम्मान से भी विभूषित किया गया। ऐसे देशभक्त, दानवीर और समाजसेवी ने 26 अप्रैल 1979 को अपनी जीवन की यात्रा पूर्ण की।

डॉ. लता अग्रवाल
भोपाल (मध्य प्रदेश)

'बाघ से सामना' पृष्ठ 9 का शेष....

शौचालय में धकेल दिया और खुद साइड में हो गया। गुस्से में बौखलाया बाघ सीधा कुत्ते के पीछे–पीछे शौचालय में जा घुसा। उसके अन्दर घुसते ही हरीश ने झटपट शौचालय का दरवाजा बाहर से बन्द कर लिया।

इतना सब कुछ पलक झपकते ही हो गया। उसकी सूझबूझ से कुछ देर के लिए खतरा टल चुका था। हरीश को खुद पर विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने वास्तव में शक्तिशाली बाघ को बन्दी बना लिया है।

पहाड़ के रहने वाले लोगों का अकसर बाघ से सामना होता रहता था इसलिए वे उसकी आवाज को पहचानते थे। पड़ोस के लोगों ने जान लिया कि बाघ गाँव में ही कहीं है। आवाज का पीछा करते कुछ लोग उधर आए। किधर है बाघ? ''किधर नहीं, इधर है शौचालय में, मैंने उसे बन्द कर दिया है।'' –हरीश ने जब उनसे कहा तो उन्हें भरोसा नहीं हुआ। तभी हरीश की माँ रुकमा देवी दूध निकालकर गौशाला से आ गईं। अपने घर के आगे जमा भीड़ को देखकर किसी अनहोनी की आशंका से उनका दिल जोर–जोर से धड़कने लगा।

उन्होंने भीड़ में आगे बढ़कर जब अपने बच्चों को सुरक्षित खड़े देखा तो उनकी जान में जान आई। उन्होंने पूछा– ''हरीश क्या हुआ?'' हरीश ने बताया– ''बाघ आया था घर में पर मैंने उसको शौचालय में बन्द कर दिया है।''

रुकमा देवी को भी सहसा विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने पूछा– ''तू तो ठीक है। तूने सियार को तो बन्द नहीं किया है।'' ''नहीं माँ! सियार नहीं वो बाघ ही है।'' –हरीश ने भरोसे भरे स्वर में कहा। गाँव के लोग तरह–तरह की बातें कर रहे थे। वे कह रहे थे– ''सियार ही होगा। खोल दो शौचालय का दरवाजा जाने दो उस बेचारे को।'' तभी कई लोगों ने कहा– ''नहीं, हमने भी गुर्राहट तो बाघ की ही सुनी थी। वह सियार नहीं है।'' मगर किसी की भी हिम्मत शौचालय के पास जाने की नहीं हो रही थी।

गाँव के बड़े और जिम्मेदार लोग आए तो उन्होंने शौचालय के बाहर बड़े लकड़ी के तख्ते रखवा दिए। ताकि बाघ कहीं शौचालय का दरवाजा न तोड़ दे। बाहर अलाव जलाकर पहरे पर लोगों को बैठाया और पत्र लिखकर दो लोगों को सुबह होते ही वन विभाग के रेंज कार्यालय में भेज दिया।

ग्यारह बजे पूरी तैयारी के साथ फॉरेस्ट रेंजर वहाँ पहुँचे तो उस समय तक आसपास के गाँवों से आए हजारों लोगों की भीड़ वहाँ पर जमा हो चुकी थी। इतने सारे लोगों के लिए अभी भी विश्वास करना मुश्किल था कि एक चौदह साल का बच्चा बाघ को इस तरह पकड़ सकता है। एक बुजुर्ग सज्जन घर के अन्दर बाघ है, यह मानने के लिए बिलकुल तैयार नही थे। वे शौचालय के रोशनदान से झाँकने लगे तो उनके हाथ पर बाघ ने झपट्टा मार दिया और वे गिर पड़े।

अब लोगों को भरोसा हो गया कि अन्दर बाघ ही है। तीन घंटे की कोशिशों के बाद बाघ को पिंजरे में बन्द किया जा सका। उन बुजुर्ग सज्जन को अस्पताल और बाघ को वन अधिकारियों द्वारा चीला वन क्षेत्र में छोड़ दिया गया। चौदह साल के नन्हे हरीश ने अपनी बुद्धिमत्ता से उस बड़े खतरे से अपने भाई की ही नहीं अपनी भी जान बचाई। उसकी बहादुरी और सूझबूझ के कारण उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया।

भारतीय बाल कल्याण परिषद नई दिल्ली ने हरीश राणा को राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया। हरीश नवगठित राज्य उत्तराखंड का पहला बहादुर बच्चा था जिसे राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार मिला। 2004 के गणतन्त्र दिवस पर देश के प्रधानमन्त्री ने उसे यह पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

विस्मयकारी भारत-12

सुधा चंद्रन भारत नाट्यम की एक मात्र ऐसी चर्चित नृत्यांगना हैं जो केवल 17 साल की उम्र में हुई एक सड़क दुर्घटना में अपना दायां पैर गंवा बैठीं परन्तु इसके बावजूद वे कृत्रिम पांव के सहारे ही पूर्ण कुशलता के साथ आज भी अपनी कला के प्रदर्शन को जारी रखे हुए हैं।

शिमला (हि.प्र.) के दूरदराज़ इलाके धरोगड़ा में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत शिक्षक वीरेंद्र कुमार ने छपी हुई जैसी अपनी सुन्दर लिखाई की बदौलत न केवल खुद एक मुकाम बनाया वरन अब तक देश-विदेश के 80,000 शिक्षक प्रतिभागियों को भी इस हुनर में प्रशिक्षित कर दिया है।

नागपुर की 29 वर्षीय ज्योति आमगे का नाम दुनिया की सबसे छोटी महिला के रूप में गिनेस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड्स में दर्ज है जिनका कद 62.8 सेमी. नापा गया है।

बूंदी का लड्डू: कीमत 50 लाख; वज़न : 29415 किग्रा. विशाखापट्टनम (आ.प्र.) में श्री भक्तानजनैया सुरुचि फूड्स कं. के मालिक पी. वी. वी. एस. मल्लिकार्जुन राव द्वारा गज़ुवाका के 78' ऊंचे गणेश जी को अर्पित किया गया, जो गिनेस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड्स में शामिल हो गया।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

गूंच कैटफ़िश ताज़े पानी में रहने वाली एक दैत्याकार मछली होती है जो भारत की केवल कुछ नदियों में ही पाई जाती है और आश्चर्यजनक रूप से यह 150 किग्रा. तक के वज़न और 2 मीटर (6.6 फ़ीट) से अधिक तक की लम्बाई की हो सकती है।

© gyashim@gmail.com/ 0 8077554501

मायरा का सपना

दिसम्बर का ठिठुरता मौसम था। दोपहर में गुनगुनी धूप छत पर आ गई थी। मायरा अपने दादा–दादी के साथ छत पर बैठी गुनगुनी धूप सेंक रही थी। अचानक उसका ध्यान क्रिसमस ट्री पर गया जो छत के ऊपर तक आ गया था। उसकी हरी–भरी शाखाएँ हवा में झूम रही थीं। मायरा उन्हें देख मुस्कुराई और सोचने लगी– ''25 दिसम्बर आने वाला है, क्यों ना मैं क्रिसमस ट्री को बहुत बढ़िया सजाकर पार्टी सेलिब्रेट करूँ। पेड़ पर बहुत सी टॉफी, बिस्कुट, बैलून वगैरह लगाऊँ और सबसे ऊपर होगा– शांताक्लॉज जो केक लेकर बैठा होगा और शांताक्लॉज बनूँगी मैं स्वयं जो बहुत बढ़िया गीत गाकर बच्चों को बुलायेगा, लुभायेगा और उनकी मनपसन्द की चीजें बाँटेगा और मुझे तो केसीओ बजाना भी आता है। वाह क्रिसमस ट्री! तुमने तो मुझे बहुत अच्छा आइडिया दे दिया। वह दादी को अपना आइडिया बताने ही जा रही थी, तभी उसे लगा, उसका सपना चूर–चूर हो रहा है क्योंकि रानी मधुमक्खी अपनी कुछ सहेलियों के साथ क्रिसमस ट्री की शाखाओं पर घूम रही थी। मायरा को लगा, यदि ये अपना छत्ता इस पर बना लेंगीं तो फिर सब कुछ धरा का धरा रह जायेगा।

दादा–दादी अन्दर जा चुके थे किन्तु मायरा अपना सपना बुन रही थी। मधुमक्खियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। मायरा के टेरिस पर बहुत से फूल खिले थे जिन पर तितलियाँ और भौंरे भी आते थे जो कि मायरा के दोस्त थे। तितली ने मायरा के पास आकर उससे उदास होने का कारण पूछा। मायरा ने क्रिसमस ट्री की शाखाओं को प्यार से छूते हुए तितली से कहा– ''देखो ना तितली मधुमक्खियों को, क्या ये कहीं और अपना छत्ता नहीं बना सकतीं?'' तितली मायरा के मन की

बात समझ गई। वह मधुमक्खी की रानी के पास लहराती हुई गई– ''रानी! रानी तुम हो बड़ी सयानी, मायरा मेरी सहेली, मन में एक पहेली'' ''लेकिन क्या? बूझो तो जानूँ।'' ''ऊँ... क्या? नहीं पता।'' ''आने वाला है क्रिसमस डे, मायरा करेगी सेलिब्रेट, इसी पेड़ पर।'' ''अच्छा हाँ, तुम्हारे छत्ता बनाने पर भला कैसे हो पायेगा सेलिब्रेशन? तुम्हारा स्वभाव तो काटने का है।''

हनी बी ने कहा– ''मेरी मरजी, मैं जहाँ चाहूँ, वहाँ बनाऊँ अपना घर।'' तितली ने कहा– ''तुम नाराज हो गईं रानी हनी बी!'' ''मैं तो ये कह रही थी, चलो सब फ्रेंडशिप कर लेते हैं।'' फिर भी हनी बी ना मानी। उसे लगा तितली अपनी सुन्दरता पर घमंड कर रही है। वह बोली– ''यह मत समझो कि तुम सुन्दर हो। मैं फूलों का रस लेती हूँ और मीठा–मीठा शहद बनाती हूँ, तुम्हारी तरह फूलों का रस पी– पीकर केवल इतराती नहीं फिरती।'' तितली बोली– ''हाँ, सो तो है रानी बी किन्तु दुनिया में सुन्दरता ही सब कुछ नहीं होती। मैं यह भी जानती हूँ, जो गुण तुम में है, वह मुझ में कहाँ?'' हनी को लगा– ''तितली तो बहुत अच्छी है।'' स्वभाव से तेज, हनी बी तितली की प्यार भरी बातें सुनकर नरम पड़ गई।

तितली ने कहा– ''आप मीठा शहद बनाती हो, यदि व्यवहार भी मीठा हो जाय यानी आप हमसे दोस्ती कर लें तो फिर 'सोने में सुहागा' हो जाय।'' हनी बी बोली– ''ठीक है, मतलब की बात करो।'' तितली ने समझाया– ''आप अपना घर सामने अमरूद की ऊँची डाल पर या वो दूर खंडहर पर बना लो तो कैसा रहेगा। क्रिसमस डे पर तुम भी चुपके से आना और मीठा शहद बाँटना।'' हनी बी ने कहा– ''अच्छा चलो, आज से हम तुम सहेली बन गए।''

रानी बी के इशारे पर सारी मधुमक्खियाँ खंडहर में जाकर छत्ता बुनने लगीं और अमरूद के फूलों से पराग कण लेने लगीं। मायरा अब खुश थी। तितली, भौंरे, फूल सभी हँस रहे थे। देखते ही देखते क्रिसमस आ गया और मायरा का सपना पूरा हुआ। सजे–धजे क्रिसमस ट्री की सबसे ऊँची डाली जो छत पर पसरी थी, मायरा बैठी केसीओ पर धुन बजा रही थीं– 'हैपी क्रिसमस डे... और बाँट रही थी मनपसन्द चीजें। सारे बच्चे झूम–झूमकर नाचते हुए गा रहे थे– हैप्पी क्रिसमस डे...। तितली, भौंरे और हनी बी फूलों के पास खुश होकर बैठे थे।

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'
कटनी (मध्यप्रदेश)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

						2		4
	8				7		9	
6		2				5		
	7			6				
			9		1			
				2			4	
		5				6		3
	9		4				7	
7		6						

उत्तर इसी अंक में

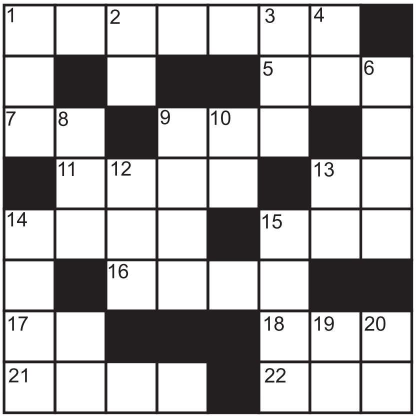

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. भारत के प्रथम राष्ट्रपति (1,3,3)
5. वरदान देने वाला (3)
7. नाखून (2)
9. खेतों में रखवाली हेतु बनाया गया ऊँचा स्थान (3)
11. विजय पताका (4)
13. बिना रेशे की गूदेदार जड़ (2)
14. ठंड, सर्दी का मौसम (4)
15. व्यवस्था, प्रबंध उपाय (3)
16. सजा–धजा, नखराला (4)
17. बिजली, दामिनी, गिरना (2)
18. सोना, बिस्तर से जुड़ी क्रिया (3)
21. एक कृष्ण भक्त कवयित्री (4)
22. जलज, नीरज, पंकज (3)

उत्तर इसी अंक में

ऊपर से नीचे

1. एक आकर्षक, बुद्धिमान मछली (4)
2. धारीदार गधा (2)
3. श्रावण मास (3)
4. कीमत, मूल्य, द्वार (2)
6. लगातार, धड़ाधड़ (4)
8. माल की बिक्री या खर्च होना (3)
9. किसी वस्तु को पाने की जिद करना (4)
10. चमड़ा, खाल (2)
12. घोड़े की काठी पर झूलता पायदान (3)
13. स्कंद, शरीर का अंग (2)
14. तेज चलने वाला (4)
15. नाश करने वाला (4)
18. संदेह (2)
19. मृत्यु के देवता (2)
20. टोंटी, रामसेतु बनाने वाला वानर (2)

कबीर वाणी...

जब कुम्हार बर्तन बनाने के लिए मिट्टी को रौंद रहा था, तो मिट्टी कुम्हार से कहती है। तू मुझे रौंद रहा है, एक दिन ऐसा आएगा जब तू इसी मिट्टी में विलीन हो जायेगा और तब मैं तुझे रौंदूँगी।

माटी कहे कुमार से, तू क्या रोंदे मोहे।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रोंदुँगी तोहे।

अच्छी सीख

चली हवा रे कितनी ठंडी,
हैं लगे काँपने तन।
फिर भी भाती सर्दी हमको,
भर उठे खुशी से मन।।

माँ बैठी है गैस जला के,
तलने गर्म पकोड़े।
ले चटनी की भरी कटोरी,
चीकू- मीकू दौड़े।।

दुबके बैठे दादा-दादी,
ले कर नरम रजाई।
सँग चाय के गर्म पकोड़े,
शीना झट ले आई।।

पीछे-पीछे लिये जलेबी,
दोनों भाई आएँ।
दादा-दादी के हाथों में,
फिर दोने पकड़ाएँ।।

बड़े प्यार से लगे खिलाने,
बैठ सामने उनके।
सीख मिली थी उनको अच्छी,
कथा- कहानी सुन के।।

सुकीर्ति भटनागर, पटियाला (पंजाब)

दियासलाई

दियासलाई, दियासलाई,
इतनी आग कहाँ से पाई ?

ऊपर तो कुछ नजर न आया,
अन्दर ज्वालामुखी छिपाया।
तपन मिली है तुम्हें कहाँ से,
क्या सूरज से आग चुराई ?...

छोटी सही तुम्हारी काठी,
टिके ना तेरे आगे लाठी।
अगर तुझे गुस्सा आ जाए,
तो पहाड़ भी कर दे राई।...

कभी जला देती फुलझड़ियाँ,
कभी पटाखों वाली लड़ियाँ।
बाँट उजाले की सौगातें,
दुनिया को है राह दिखाई।...

दीप जला अँधियारा हरना,
चूल्हा फूँक पेट को भरना।
अपने इन्हीं नेक कामों से,
सबकी करती रहो भलाई।...

डॉ. फहीम अहमद
सम्भल (उत्तरप्रदेश)

नाटिका

अनमोल पाठ

(रमेश, महेश, दिनेश, राकेश और चंद्रेश ये पाँच साथी जो 9–10 वर्ष के हमउम्र हैं। एक दिन वे आपस में विचार–विमर्श कर रहे हैं कि उन्हें बड़े होकर क्या बनना है ?)

रमेश : सबके जीवन का एक सपना होता है कि उन्हें भविष्य में क्या बनना है? मेरे मित्र महेश, इस बारे में तुमने कुछ सोचा है?

महेश : हाँ, मैंने अपने बारे में जरूर कुछ सोचा है। मैं जब भी खाली समय पाता हूँ तो अपने बारे में ही सोचता हूँ। मेरे गुरु जी कहा करते हैं कि अपने को योग्य बनाओ ताकि दूसरों का हित कर सको।

रमेश : वह तो ठीक है। किन्तु यह तो बताओ कि बनना क्या है?

महेश : एक बार मेरे पिताजी अपनी एक पुस्तक का विमोचन कराने हेतु जिलाधीश के ऑफिस में गए थे। मैं भी उनके साथ था। उस समय वह एक मीटिंग ले रहे थे। हम उनके इन्तजार में बैठ गए। आते ही उन्होंने पहले क्षमा याचना की फिर पुस्तक का विमोचन किया। दबंगों से अपने खेत को बचाने के लिए एक बूढ़ा व्यक्ति उनके पास आया हुआ था। वह चलते हुए गिरने लगा तो कलेक्टर साहब ने न केवल उसको सँभाला अपितु फोन पर ही उसकी समस्या का तत्काल समाधान किया। यह मेरे लिए प्रेरक था और तभी मैंने उनके जैसा कलेक्टर बनने का संकल्प लिया। रमेश! अब तुम बताओ तुम क्या बनना चाहते हो ?

रमेश : मेरे दादाजी! प्रायः बीमार रहते हैं। मेरे पिताजी को उनके इलाज के लिए बार–बार हॉस्पिटल जाना पड़ता है। कई बार मैं भी उनके साथ गया था अतः घर पर उनका इलाज अच्छे से हो, इसके लिए मैं डॉक्टर बनना चाहता हूँ।

दिनेश : मित्र राकेश! हमारा साथी रमेश डॉक्टर बनना चाहता है और महेश कलेक्टर बनना चाहता है तो तुम्हारे मन में क्या है? तुम भी कुछ बनना चाहते हो या यूँ ही बिना किसी उद्देश्य के पढ़ाई कर रहे हो।

राकेश : अरे मित्र दिनेश! यह कैसा प्रश्न है? क्या

तुम्हें यह लगता है कि मैं स्कूल आकर केवल समय बिता रहा हूँ। यदि ऐसा सोचते हो तो तुम्हें अपनी सोच बदलनी होगी। मेरे अंकल फौज में कर्नल है। वह जब घर आते हैं तो उनके व्यक्तित्व और वेशभूषा से मैं बहुत प्रभावित होता हूँ। मेरे मन में वैसी ही वेशभूषा की छवि बनी हुई है, अतः मैं फौज में अधिकारी बनना चाहता हूँ।

राकेश : मित्र दिनेश! आपने मेरे बारे में जानकारी प्राप्त कर ली किन्तु मैं पूछना चाहता हूँ कि आप क्या बनना चाहते हो ? मेरी एक सलाह आपको है। आप प्रायः भाषण प्रतियोगिताओं में भाग लेते हो और प्रथम स्थान प्राप्त करते हो। कई बार वाद–विवाद प्रतियोगिता में भी आप प्रथम आये हो। इसका मतलब यह है कि आपकी भाषण देने की क्षमता अच्छी है। इस दिशा में भी कुछ सोच सकते हो।

दिनेश : मित्र राकेश! आपने मेरे बारे में सही सोचा है। मुझे लगता है कि जब कोई मेरे बारे में पूछे तो मैं आपको ही आगे कर दूँ। मेरे बारे में आपसे अच्छा दूसरा कोई बता नहीं सकता। सही कहा आपने मेरे जीवन का सपना वकालत करना ही है। मैं चाहता हूँ कि सबको सही समय पर सही न्याय मिले।

चंद्रेश : अरे मेरे साथियों! मुझे क्यों छोड़ रखा है? मुझसे नहीं पूछोगे कि मैं क्या बनना चाहता हूँ?

राकेश : धैर्य रखो मित्र! अब हम तुमसे ही पूछने वाले थे किन्तु लगता है तुम्हारा धैर्य जवाब दे गया। जीवन में कुछ बनने के लिए धैर्य से बढ़कर कोई साधन नहीं है। अच्छा मित्र चंद्रेश! अब तुम भी तो बता दो कि तुम क्या बनना चाहते हो ?

चंद्रेश : तुम लोग देर आए दुरुस्त आए की कहावत चरितार्थ कर रहे हो। जहाँ तक मेरे कुछ बनने की बात है। मैं तुम सबका बाप बनना चाहता हूँ।

सभी : यह तुम क्या कह रहे हो मित्र? हम सबके बाप तो पहले से ही हैं। बाप से तुम्हारा मतलब क्या है?

चंद्रेश : अरे भाई, तुम सब बाप शब्द में ही उलझ कर रह गए हो। जब मैं नेता बनकर मन्त्री, मुख्यमन्त्री बनूँगा तो तुम सब मेरे अंडर में ही काम करोगे न। अब तो तुम लोग मेरे कहने का आशय समझ गए होंगे।

सभी : अरे मित्र! एक कहावत है कि पैर उतने ही फैलाओ जितनी चादर हो।

चंद्रेश : चादर की बात मत करो। तुम सब देखोगे मैं एक दिन देश का प्रधानमन्त्री बनूँगा।

(तभी गुरुजी का प्रवेश)

गुरुजी : आज तुम लोग खाली समय में क्या विचार–विमर्श कर रहे हो? कुछ विशेष बात हो तो मुझे भी बताओ।

रमेश : श्रीमान, आप प्रायः यह कहते हैं कि हमें अपने जीवन का लक्ष्य बना लेना चाहिए। हम लोग अपने–अपने लक्ष्य की बात कर रहे थे।

गुरुजी : जरा मुझे भी बताओ कि तुम सबने अपना क्या लक्ष्य बनाया है?

रमेश : श्रीमान, मैं डॉक्टर बनना चाहता हूँ। महेश कलेक्टर, राकेश कर्नल तो दिनेश वकील और चंद्रेश नेता बनना चाहता है।

गुरुजी : मुझे इस बात की खुशी है कि तुम लोगों ने इस उम्र में ही अपने लक्ष्य का निर्धारण कर लिया है। यह अच्छी बात है। तुम सब उच्च पद प्राप्त करोगे तो मुझे बहुत खुशी होगी किन्तु ऊँचे पद के साथ संस्कार भी ऊँचे होने चाहिए।

राकेश : गुरुजी! संस्कार क्या चीज है? यह कहाँ मिलता है ?

गुरुजी : तुम सब चलो मैदान में। वहाँ तुम्हारे संस्कार की परीक्षा होगी।

(सभी मैदान में जाते हैं। वहाँ क्रिकेट का खेल हो रहा होता है। थोड़ी देर में एक खिलाड़ी चोटिल हो जाता है। गुरुजी, अपने उन शिष्यों की ओर देखते हैं किन्तु कोई भी सहायता के लिए आगे नहीं बढ़ता है।

गुरुजी : संस्कार की शिक्षा में तुम सब फेल हो गए हो। उस चोटिल खिलाड़ी की सहायता के लिए तुममें से कोई नहीं गया। इसका मतलब तुम लोगों की संवेदना सो गई है या मर गयी है। रमेश! तुम डॉक्टर बनना चाहते हो। कम से कम तुम्हें तो उसकी सहायता में जाना चाहिए था। बच्चो! प्रेम, दया, मैत्री, क्षमा, परोपकार, भाईचारा आदि सभी सद्‌गुण है जिनका जीवन में होना अत्यन्त आवश्यक है।

सभी : गुरुदेव! आपने हमें संस्कारों की शिक्षा एक झटके में दे दी है। हम कभी इसे भूलेंगे नहीं।

गुरुजी : भूलना भी नहीं चाहिए। कल एक कलेक्टर घूस लेते हुए पकड़े गए। कुछ महीने पहले एक डॉक्टर गुर्दा निकालते हुए पकड़े गए थे, उन्हें जेल की सजा हो गई। संस्कार के बिना यही होता है। जीवन में तुम सब कुछ भी प्राप्त करो पर इस बात का अवश्य ध्यान रखना की मूल्य और संस्कारों को कभी मत छोड़ना। यही तुम्हारे व्यक्तित्व को निखारेंगे और तुम्हें नाम और यश देंगे।

सभी : गुरुजी! आपके इस अनमोल पाठ को हम सदैव याद रखेंगे।

प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'
लाडनूं (राजस्थान)

बूझो तो जानें

1

हिम की चादर में लिपटा,
अटल सदियों से खड़ा।
आँधी चले या तूफान,
दुश्मनों से यह लड़ा।

5

लकड़ी जैसा मेरा तन,
भीतर मोतियों-सा जड़ा।
कश्मीर मेरी पहचान,
बादाम से लगता बड़ा।

2

उतर हिमालय की गोदी से,
धरती पर बल खाए नित।
प्यास बुझा के अपने जल से,
पाप सभी धो जाए नित।

3

भारत माँ का वो ताज बना,
केसर की महके है क्यारी।
उस राज्य का नाम बताओ,
डल झील जहाँ प्यारी-प्यारी।

4

चाँदी-जैसा रूप अनोखा,
सर्दी में मैं जम जाऊँ।
ठोस रूप पानी का हूँ मैं,
गर्मी में सबको भाऊँ।

गोविन्द भारद्वाज, अजमेर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

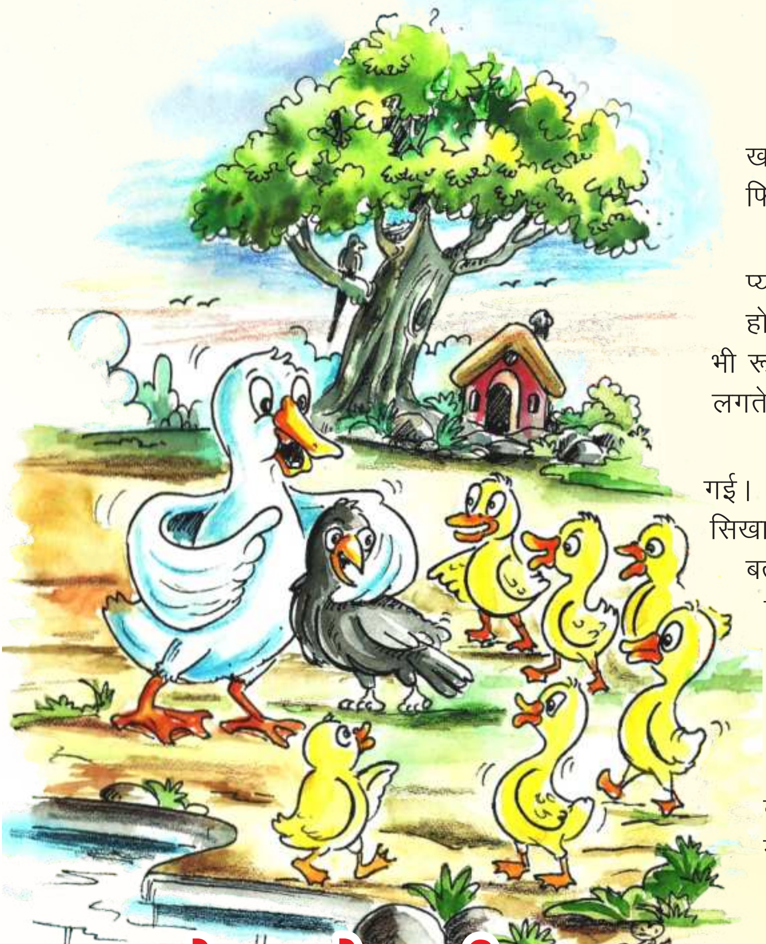

सलोना ने भरी उड़ान

रूपल बत्तख काफी दिनों से अपने अंडे से रही थी। आखिर इन्तजार की घड़ियाँ खत्म हुई और उसके अंडों में से प्यारे–प्यारे चूजे निकले। सात चूजे पीले रंग के थे और एक स्लेटी रंग का था। रूपल कुछ हैरान थी क्योंकि इससे पहले उसके बच्चे स्लेटी रंग के कभी नहीं हुए थे। रूपल ने उसका नाम सलोना रखा। वह सभी बच्चों की देखभाल अच्छी तरह करने लगी।

बच्चे थोड़े बड़े हुए तो सलोना को दूसरे बच्चे कालू–कालू कहकर चिढ़ाने लगे। "तू हमारा भाई हो ही नहीं सकता, हम सारे गोल्डन–गोल्डन हैं पर तू काला।" एक बच्चा कहता। "लगता है किसी कूड़े के ढेर में पड़ा रो रहा होगा, माँ तरस खाकर उठा लाई होगी।" दूसरा कहता। फिर तो सभी उसे मिलकर चिढ़ाते।

रूपल उन्हें डाँटती– "कितना प्यारा है, तुम सब क्यों इसके पीछे पड़े रहते हो।" वह उसे बहुत प्यार करती थी, पर जब भी रूपल खाना लेने जाती बच्चे उसे चिढ़ाने लगते। "तू सलोना नहीं कलोना है।"

एक दिन रूपल उन्हें तालाब पर ले गई। "चलो बच्चो, आज मैं तुम्हें तैरना सिखाऊँगी।" रूपल ने सबको तैरने का तरीका बताया और पानी में उतरने को कहा। एक–एक करके सभी बच्चे पानी में उतर गए और तैरने लगे पर सलोना डर गया वह पानी में नहीं गया। उस दिन तो बच्चों को एक और कारण मिल गया। उन्होंने सलोना को डरपोक–डरपोक कहकर खूब चिढ़ाया। रूपल ने सबको डाँटा– "सलोना डरपोक नहीं है, वह बस थोड़ा दुबला है, देखना कुछ दिन बाद तुम सबको तैरने में हरा देगा। उसकी बोली तो देखो कितनी मीठी है।"

अब रूपल ने सलोना का अधिक ध्यान रखना शुरू कर दिया। वह उसे अधिक खाना देती और अधिक प्यार करती। जब सब बच्चे चिढ़ाते तो सलोना का मन करता कि घर छोड़कर चला जाए पर माँ के प्यार को याद करता तो वह जा नहीं पाता था। अब सब बच्चे जब तैरने जाते सलोना घर पर ही रुक जाता।

एक दिन जब रूपल बच्चों के साथ तालाब से लौटी तो सलोना घर पर नहीं था। रूपल परेशान हो गई। वह उसे दूर–दूर तक खोज आई पर सलोना नहीं मिला। वैसे तो सभी बच्चे उसे चिढ़ाते रहते थे पर न जाने क्यों उन्हें भी उसके बिना अच्छा नहीं लग रहा था।

कुछ दिन बाद बच्चे गेंद उछाल–उछाल कर खेल रहे थे, तभी उनकी गेंद एक पेड़ की डाली में अटक गई और उनका खेल रुक गया। वे

पेड़ के नीचे असहाय से देख रहे थे कि तभी पास के पेड़ से सलोना उड़ता हुआ आया और उनकी गेंद नीचे गिरा दी। "सलोना तुम! तुम उड़ सकते हो?" सभी बच्चे हैरानी से चिल्लाए। अब सलोना नीचे आ गया। उसे सभी बच्चों ने घेर लिया। "तुम कहाँ चले गए थे?" "क्यों चले गए थे?" "जानते हो तुम्हारे बिना हमारा बिलकुल भी मन नहीं लगता था।" सभी बच्चे शोर मचा रहे थे। सलोना–सलोना सुनकर रूपल बाहर आई और उसे अपने पंखों में समेट कर प्यार करने लगी।

"कहाँ थे तुम इतने दिन? हमनें तुम्हें कितना खोजा।" रूपल बोली। "मैं बताती हूँ।" एक कोयल ने वहाँ आकर कहा। "तुम तो पास के पेड़ पर रहती हो न?" रूपल ने पूछा। "हाँ, मेरा नाम कुहू कोयल है, और सलोना मेरा बच्चा है। मैं तुम्हारा कैसे धन्यवाद करूँ कि तुमने इसे इतने प्यार से पाला।" ''मैं कुछ समझी नहीं।" रूपल ने हैरानी से पूछा।

कुहू कोयल ने पूरी बात बताई– "असल मैं मैंने अपने लिए कोई घोंसला नहीं बनाया था। अंडे देने का समय आया तो मैं परेशान हो गई और पेड़ की डाली पर ही दो अंडे दे दिए। घोंसला न होने के कारण एक अंडा नीचे गिरकर टूट गया। मैं डर गई कि मेरा दूसरा अंडा भी ना गिर जाए। मैं उसे रखने के लिए कोई सुरक्षित जगह खोज रही थी कि तभी मुझे एक झाड़ी में तुम्हारे अंडे दिखाई दिए

आओ पढ़ें : नई किताबें

इस पुस्तक की विषय वस्तु शीर्षक के अनुरूप है। इसमें दो–दो पंक्तियों में रचित 105 पदों की एक लम्बी कविता के माध्यम से बच्चों को अनेक उपयोगी शिक्षाप्रद बातें सहजतापूर्वक बताई है। बच्चे निश्चित ही इस कविता को याद करके गुनगुनाएँगे तो सुन्दर सरस अभिव्यक्ति के साथ–साथ अपने जीवन में अच्छे संदेश भी ग्रहण कर सकेंगे। यह एक नवीन, अनूठा व उपयोगी प्रकाशन है।

पुस्तक का नाम : अच्छी बातें **लेखक :** राजकुमार निजात
मूल्य : 150 रुपये **पृष्ठ :** 53 **संस्करण :** 2021
प्रकाशक : आनन्द कला मंच प्रकाशन, भिवानी (हरियाणा)

इस पुस्तक की कहानियाँ इस बात में विशेष है कि इनके मुख्य पात्र गाय, घोड़ा, हाथी, गधा, बैल, बकरी, मोर, कछुआ, बन्दर आदि है। ये पात्र स्वयं बोलते नहीं, मगर इनके हाव–भाव, क्रिया कलाप से मनुष्यों के साथ मिलकर संदेशपूर्ण रोचक कहानियों की रचना हुई है। ये सभी कहानियाँ उद्देश्यपूर्ण है। इनमें पशुओं के प्रति हमारे दायित्व व व्यवहार की प्रेरक सीख है जो बच्चों को अवश्य ही अनुकरणीय लगेगी। इस सजिल्द, सचित्र पुस्तक में 9 कहानियों का सुन्दर संकलन हुआ है।

पुस्तक का नाम : : गजराज की वापसी **लेखक :** डॉ. कमल चोपड़ा
मूल्य : 295 रुपये **पृष्ठ :** 63 **संस्करण :** 2021
प्रकाशक : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

और मौका मिलते ही मैंने अपने अंडे को तुम्हारे अंडों के साथ रख दिया। एक बच्चे का रंग अलग देखकर मैं समझ गई कि वह मेरा बच्चा है, पर जब तक वह उड़ना न सीख जाए मैं उसे पेड़ पर नहीं ले जा सकती थी। तुमने मेरे बच्चे को जितना प्यार दिया, जिस तरह से उसकी देखभाल की शायद मैं भी न कर पाती। जब वह तैर नहीं पाया तो वह बहुत दुःखी था। "तब मैंने उसे पास जाकर समझाया कि– ''तुम अपने को कमजोर मत समझो। तुम वह कर सकते हो जो दूसरे बच्चे नहीं कर सकते।"

सलोना रोता हुआ बोला– "मैं कमजोर हूँ, मैं कुछ भी नहीं कर सकता।" "सब तैर रहे हैं पर मैं नहीं तैर पाता।" तब मैंने उसे बताया कि– "तुम वह काम कर सकते हो जो दूसरे बच्चे नहीं कर सकते।" "तुम मीठी आवाज में गा सकते हो, तुम उड़ सकते हो।" ''मुझे तो उड़ना नहीं आता।" सलोना बोला। मैंने उसकी हिम्मत बढ़ाई– "मैं तुम्हें सिखाऊँगी।"

"उस दिन से जब तुम बाकी बच्चों को तालाब पर तैरने के लिए ले जातीं, मैं सलोना को उड़ना सिखाती। कोयल का बच्चा होने के कारण वह आसानी से उड़ना सीख गया और एक दिन पेड़ पर जा बैठा। अब वह बहुत खुश है क्योंकि वह अपने को कमजोर नहीं समझता।" कुहू ने अपनी बात पूरी की।

सभी बच्चे बोले– "सलोना तुम क्यों चले गए? लौट आओ न, हमारा तुम्हारे बिना मन नहीं लगता, अब हम तुम्हें कभी नहीं चिढ़ाएँगे, हमें माफ कर दो।" कुहू बोली– "बच्चो! सलोना एक कोयल है, वह अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, पर वह तुमसे मिलने जरूर आएगा।" "हाँ, मैं रोज तुमसे मिलने आऊँगा, तुम्हारे साथ खेलूँगा और तुम्हारे लिए पेड़ों से मीठे–मीठे फल भी लाया करूँगा।" सलोना ने सबसे कहा। यह सुनकर सभी खुशी से चहकने लगे।

वन्दना गुप्ता
दिल्ली

उलझन कैसी...?

प्रस्तुत चित्र में गोले के अंदर कई गोले बनाकर इस बात की उलझन दी गई है कि किस गोले में सबसे ज्यादा और किसमें सबसे कम गोले बने हैं... क्या आप जल्दी से बता पाएंगे?

– राकेश शर्मा राजदीप

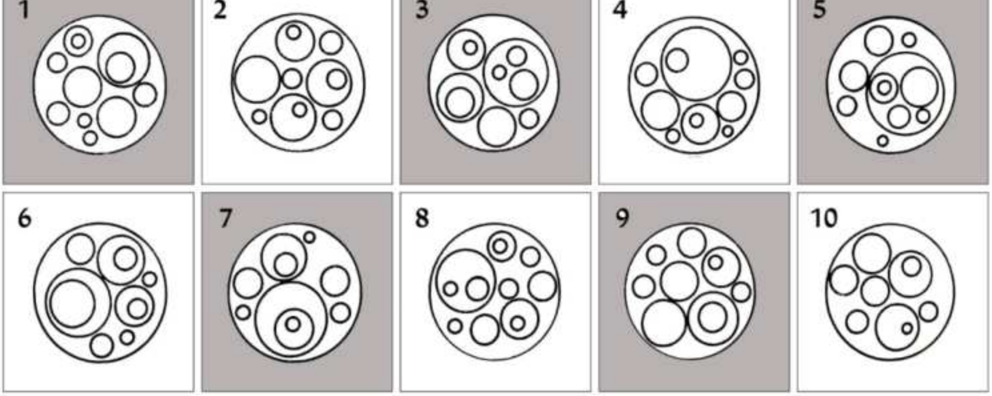

उत्तर इसी अंक में

युद्ध किसी समस्या

बच्चो, युद्ध के बारे में आपने कथा–कहानियों में सुना और इतिहास में पढ़ा होगा। पुराने जमाने में दो राजाओं की सेनाओं के बीच युद्ध हुआ करते थे जिनमें बड़ी संख्या में सैनिकों की मौत हो जाती थी। सैनिकों की मौत के आधार पर ही राज्य हारे और जीते जाते थे। सैनिकों के साथ–साथ न जाने कितने हाथी–घोड़े आदि पशुओं की मौत इन लड़ाइयों में हो जाती थीं। एक राजा अपने राज्य का विस्तार करने के लिए और अपनी वीरता को सिद्ध करने के लिए हिंसा का सहारा लेता था। आज यहाँ तो कल वहाँ, इस तरह के हमले और मारकाट चलती ही रहती थी। राजाओं के अहंकार और प्रसिद्धि की भूख शान्त होने के अलावा इन युद्धों से क्या हासिल होता था? यह प्रश्न आज भी हमारे सामने खड़ा होता है।

दो भयानक विश्व युद्ध

आधुनिक युग की बात करें तो पिछली शताब्दी में दो भयानक युद्ध हो चुके हैं। इन युद्धों में लाखों–लाखों लोगों की मौत के बाद भविष्य में दुनिया को ऐसे खून–खराबे से बचाने के लिए 24 अक्टूबर 1945 को सभी देशों ने मिलकर संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया था, मगर अफसोस कि इसके लगभग 8 दशक बाद आज भी दुनिया में युद्ध और हिंसा रुक नहीं पाई है। विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में इतना विकास होने के बाद भी युद्ध के रूप में हिंसा का यह तांडव नृत्य मानवता के लिए शर्म की बात है।

रूस और यूक्रेन : 21 माह से युद्धरत

आप जानते ही होंगे कि रूस और यूक्रेन के बीच में पिछले 21 माह से युद्ध चल रहा है। इस समर में सैनिकों के अलावा हजारों आम नागरिकों की जानें जा चुकी हैं। आज के युद्ध का यह नया रूप है जहाँ शहरों के अन्दर बम गिराए जाते हैं और निर्दोष लोग मारे जाते हैं। इतने लम्बे युद्ध के बावजूद, इतना अधिक खून बहाने के

का समाधान नहीं

बाद भी कोई समाधान नजर नहीं आता क्योंकि समाधान युद्ध से नहीं, बातचीत की टेबल पर ही निकाला जा सकता है।

इजरायल और फिलिस्तीन के बीच युद्ध

7 अक्टूबर 2023 को फिलिस्तीन के आतंकवादी समूह हमास ने इजरायल पर हमला किया और लगभग 1200 निर्दोष नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया। इतना ही नहीं, 200 से अधिक लोगों का अपहरण किया और उन्हें अपने इलाके में ले जाकर बंधक बना लिया। इसके बाद से पिछले लगभग दो माह से इजरायल की सेना फिलिस्तीन की गाजा पट्टी पर लगातार हमले कर रही है। इन हमलों में 10 हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं जिनमें आधे के करीब तो मासूम बच्चे हैं। हजारों मकान तबाह हो चुके हैं और लाखों बेघर लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर–उधर शरण ढूँढ़ रहे हैं। अस्पतालों में इलाज करा रहे हजारों घायल लोग भी सुरक्षित नहीं हैं क्योंकि अस्पतालों पर भी बम गिराए जा रहे हैं। ये युद्ध दिनोंदिन भयावह रूप लेते जा रहे हैं। पुराने जमाने की तरह अब ये युद्ध मात्र दो सेनाओं के बीच लड़े जाने वाले युद्ध नहीं रह गए हैं। बड़ी संख्या में निर्दोष नागरिकों और मासूम बच्चों की हत्याएँ मानवता के बीच बहुत बड़ा अपराध है।

युद्ध काल में हमारा कर्तव्य

हम सोच सकते हैं कि ये युद्ध हम से हजारों किलोमीटर दूर हो रहे हैं और हम अपने शहर तथा देश में सुरक्षित हैं। हम क्यों चिन्ता करें? लेकिन ऐसा सोचना उचित नहीं है क्योंकि जिस दिन हमारे भीतर की संवेदना मर जाएगी, हमारे आसपास भी हिंसा का माहौल बनने में देर नहीं लगेगी। आओ, हम सब मिलकर इन युद्धों में मरने वाले नागरिकों और बच्चों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें, उनके परिवारों के दुःख के साथ अपनी संवेदना प्रकट करें और यह प्रार्थना करें कि ये युद्ध जल्दी से जल्दी बन्द हों और लोगों के जीने के

एक हीरे की अनोखी यात्रा

हीरा अनमोल है, यह कोयले की खदानों, चन्दन वनों और प्राचीन खंडहर कब्रिस्तानों से भी प्राप्त होता है। हीरे कई प्रकार के होते हैं, असली हीरा घोर अंधकार में भी सतरंगी चमक पैदा कर देता है। खैर! यहाँ संसार के एक अद्वितीय हीरे की एक अनूठी कहानी प्रस्तुत है–

24 जनवरी 1905 में दक्षिणी अफ्रीका में हीरों की एक खान का मैनेजर एक रहस्यमय गड्ढ़े का निरीक्षण कर रहा था क्योंकि गड्ढ़े की मिट्टी से सतरंगी चमक दिखाई दे रही थी। उसने लकड़ी की छड़ी से गड्ढ़े की मिट्टी इधर–उधर की तो वहाँ एक बहुत बड़ा हीरा पड़ा पाया।

एक तरह से वह संसार का अद्वितीय हीरा था। इतना बड़ा हीरा उससे पहले कभी पाया नहीं गया था। उसका शुद्ध वजन एक पौंड 900 औंस (करीब 850 ग्राम) था तथा मक्खन की तरह सफेद था। इस हीरे के मिलने की खबर दूर–दूर तक पहुँच गयी। इस हीरे को खान के मालिकों से 'ट्रांसवाल सरकार' ने गुप्त राशि देकर खरीद लिया और इंग्लैंड के सम्राट 'एडवर्ड सप्तम' को उपहार में देना चाहा। लेकिन एक कठिन समस्या खड़ी हो गई– इतने मूल्यवान हीरे को सुरक्षित रूप से इंग्लैंड तक कैसे भेजा जाये? क्योंकि रास्ते में उसके चोरी हो जाने का डर था।

सरकारी अधिकारियों ने तरह–तरह की स्कीमें बनाई ताकि हीरे को चोरों से बचा सके। एक गुप्त योजना के तहत अधिकारियों ने उसे पूरी सुरक्षा के साथ इंग्लैंड भेजने का प्रबन्ध किया और उसकी खबरें कई अखबारों में छपी। सशस्त्र पुलिस की कड़ी निगरानी में 8 व्यक्ति, जो खुद शस्त्रों से लैस थे। उसे खान में से लेकर निकले और वहाँ से 29 मील दूर तक प्रिटोरिया शहर में लेकर पहुँचे। वहाँ से वे रेल के एक खास डिब्बे में सवार हुए, जो केपटाउन जाने वाली रेलगाड़ी से जोड़ा गया। केपटाउन से वे समुद्री जहाज में इंग्लैंड के लिए रवाना हुए। हीरे को एक इस्पात की तिजोरी में रखा गया था, चार सशस्त्र व्यक्ति दिन रात तिजोरी पर पहरा देने लगे। जहाज इंग्लैंड के तट पर पहुँचा तो हीरा फिर सशस्त्र पुलिस की पूरी निगरानी में एक रेलगाड़ी द्वारा लंदन पहुँचाया गया, जहाँ से वह उसी दिन बैंक के हवाले किया गया।

जब बैंक में वह मुहरबन्द डिब्बा खोला गया, जिसमें हीरा रखा गया था, तो उसमें हीरे की जगह एक पत्थर देखकर तमाम सरकारी अधिकारियों की आँखें फटी की फटी रह गयी। दरअसल वह हीरा, चोरों को चकमा देने के लिए रूई और कागज में लपेटकर एक साधारण से डिब्बे में बन्द करके डाक द्वारा इंग्लैंड भेज दिया गया था। यह एक अनमोल हीरा आज भी संसार में मौजूद है, लेकिन यह किसके पास है, यह एक रहस्य का विषय हैं।

कमल सोगानी
भवानीमंडी (राजस्थान)

दस सवाल दस जवाब

(1) महाभारत के इन पात्रों को पहचानिये।

(2) महाभारत के लेखक कौन थे?

(3) दुर्योधन ने कृष्ण के सामने युद्ध के पहले क्या माँग रखी?

(4) द्रोणाचार्य ने एकलव्य से क्या गुरु दक्षिणा ली?

(5) महाभारत का युद्ध कहाँ हुआ?

(6) किसने विवाह के समय ही अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली थी?

(7) महाराज धृतराष्ट्र के मन्त्री कौन थे?

(8) अभिमन्यु के माता–पिता का क्या नाम था?

(9) भगवद्‌गीता किस ग्रंथ का एक भाग है?

(10) पांडव पाँच भाई थे, उनके नाम बताओ?

उत्तर इसी अंक में

- एक नए वकील ने अपना दफ्तर खोला। दूसरे ही दिन एक व्यक्ति ऑफिस में घुसने लगा, वकील ने टेलीफोन उठाया, दो सेकंड ठहरा और बोला– देखो सेठ मनोहरलाल से कहो कि वह अपील मय खर्चे के जीत गए। फिर नवागन्तुक की ओर देखकर बोला– जी जनाब! फरमाइये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?
  वह हिचकिचाते हुए बोला– मैं तो आपका टेलीफोन ठीक करने आया हूँ।

- पति – मेरा ख्याल है कि कार की खिड़कियाँ खोल देनी चाहिए बहुत गर्मी है।
  पत्नी – क्यों पड़ोसियों से मेरी बेइज्जती करने पर तुले हो? उनसे मैंने कह रखा है कि हमारी कार एयर कंडीशन है।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

सर्दी के दोहे

चीकू मीठी तृषा को, भाया जाड़ा रूप,
सुबह-सुबह दालान में, आती प्यारी धूप।

कसरत जो बच्चे करें, जाड़ा उनका मीत,
उनको मिलती हर खुशी, पाते वो हर जीत।

मफलर स्वेटर कोट का, सभी ले रहे नाम,
जाड़ा आते बढ़ गया, हीटर जी का काम।

नरम गुलाबी सी लगे, जाड़े वाली धूप,
मुसकाता लगता भला, सूरज जी का रूप।

खुशी लुटाता आ गया, जाड़े का त्योहार,
खेलकूद की मस्तियाँ, लाई खुशी बहार।

महेन्द्र कुमार वर्मा
भोपाल (मध्य प्रदेश)

चूहे जी

सूट पहन कर चूहे जी।
चलें अकड़ कर चूहे जी।।

गिट-पिट बोलें अँग्रेजी,
आँख नचा कर चूहे जी।

मूँछें ऐंठ डराते हैं,
छड़ी दिखाकर चूहे जी।

दिख जाए यदि बिल्ली तो,
भागें, डर कर चूहे जी।

विज्ञान व्रत
कोटा (राजस्थान)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

आनन्द की खोज

मनु से अपने मित्र रवि की उदासी देखी नहीं जा रही थी। रवि बिलकुल सेहतमन्द था और पहली बार वह कक्षा में तीसरे स्थान पर आया था। पहली से सातवीं कक्षा तक यह पहली बार ऐसा हुआ और उसका मन तनाव में रहने लगा। अब उसे लगता था कि प्रथम नहीं तो कद्र भी नहीं। वह अपने आप को बेकार मानने लगा था। मनु उसको बार–बार समझा रहा था कि– ″रवि तुमको पीलिया हो गया था। तुम पूरा एक महीना बीमार रहे थे।″ मगर रवि फिर भी निराश ही था। अब मनु ने कहा– ″पीलिया होने से पहले यानी तीन महीने पहले रवि याद करो, ना दोस्त! तुमने राष्ट्रीय विज्ञान प्रतियोगिता में पहला पदक जीता था।″ मगर रवि अनसुना करता रहा।

मनु ने उसको कुछ पुस्तकें पढ़ने को दीं जिनमें जीवन को खुशहाल बनाने की बहुत आसान विधियाँ दी गई थीं। रवि ने जब यह सब साहित्य पढ़ा तो उसके भीतर बहुत बदलाव आया। उसने बरामदे में रखे गमलों की सेवा की और उसमें खिलते फूलों को देखकर खूब खुश रहना सीखा। जब रवि हर समय मस्त और व्यस्त रहने लगा तो मनु ने उसको बताया– ″हम अगर अपने

मन में झाँकें तो वहाँ कोई है जो मार्ग दिखाता है।" ''अच्छा सचमुच मनु?" रवि ने उत्सुकता से कहा।

"हर इनसान के भीतर सोच की एक अलग ही दुनिया चल रही होती है। यह दूसरी दुनिया उसको बार–बार मदद करती है। अपने दूसरे रूप को पहचानना चाहिए।" रवि गौर से सुन रहा था। उसको बहुत आनन्द आ रहा था। मनु कहता जा रहा था– "इस दूसरे रूप में रहकर वह अनगिनत परेशानियों का हल प्राप्त करता है। विश्व विख्यात कवि पाब्लो नेरूदा हमेशा हर किसी से बहुत स्नेह से मिलते रहे। वे जब लिखते थे तब ही कड़वे सच को चखते थे और बिंदास लिखते थे बाकी हर वक्त वे अपनी दूसरी छवि में ही जिया करते थे।"

अब तो रवि को भी कुछ याद आया और वह झट से बोला– "हाँ मनु! उदाहरण के तौर पर गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को ही देख लीजिए। वे एक कवि थे, विचारक थे, मगर मन ही मन वे अपने आपको बालक मानते थे। उन्होंने साठ साल की उम्र में बच्चों की तरह माटी के खेल किये। गीली मिट्टी चाक पर चलाकर बर्तन और खिलौने बनाये जो आज भी शान्ति निकेतन में सुरक्षित है। उन्होंने पैंसठ साल के बाद अपने कल्पना के नमूने के आधार पर माटी की एक कुटीर भी बना दी, नाम रखा "श्यामली"। टैगोर को उनके इस कोमल और चंचल रूप ने जीवित रखा और उत्साहित भी।"

मनु ने उत्साहित होकर कहा–''हाँ... हाँ... रवि! हमें संसार में हर जगह आनन्द मिल सकता है पर हम देखते ही नहीं। एक बार की बात है एक नादान अमीर लड़का था उसको उसके गुरु ने बहुत समझाया– मन के भीतर झाँक कर देखो तो भरपूर आनन्द ही आनन्द है पर इसका कोई एक रूप नहीं है। मगर वह नहीं माना, जिद पर अड़ा रहा। उसको अपनी आँखों से देखना था कि आनन्द क्या होता है? गुरु उसको हरियाली सी जगह पर ले गये जहाँ सरसों के खेत थे। तितलियाँ, भँवरे थे। गुरु ने कहा कि तुम कुछ देर यहीं पर ठहरो। मैं बस अभी वापस आया।"

गुरु की अनुपस्थिति में कोयल ने गीत सुनाया, शीतल पवन भी बहने लगी, अचानक कुछ पल को हल्की बारिश हो गई और आसमान में इन्द्रधनुष भी बन गया। बारिश के बाद मौसम और भी सुहाना हो गया। गुरु वापस लौटे मगर वे चकित थे कि अमीर लड़का अब भी जिद पर अड़ा था – "आनन्द कहाँ है?" अब बताओ गुरु बोलते तो क्या? वे हैरान रह गये।

"हाँ... हाँ... सही कहा।" रवि मुसकुराकर बोला। मनु भी सन्तुष्ट था। उसको अपने मित्र रवि का सकारात्मक रूप बेहद अच्छा लग रहा था। रवि ने अपने आपको हमेशा खुश और रचनात्मक बनाये रखने का संकल्प ले लिया था।

पूनम पांडे
अजमेर (राजस्थान)

जरा हँस लो

नौकर – सेठजी, मैं नौकरी छोड़कर जा रहा हूँ।

सेठजी – क्यों भई आखिर कारण क्या है ?

नौकर – आपको मुझ पर विश्वास नहीं है।

सेठजी – यह किसने कहा ? मेरी अलमारी की चाबियाँ तक मेज पर पड़ी रहती हैं।

नौकर – सेठजी, आपका कहना सही है पर इसकी एक भी चाबी अलमारी में नहीं लगती।

व्हाट्सएप कहानी

एक बालक अपने माँ–बाप की खूब सेवा किया करता था। उसके दोस्त उससे भी कहते कि अगर इतनी सेवा तुम भगवान की करो तो तुम्हें भगवान मिल जायेंगे। लेकिन इन सब चीजों से अनजान वह अपने माता–पिता की सेवा करता रहा।

एक दिन उसकी माँ बाप की सेवा–भक्ति से खुश होकर भगवान धरती पर आ गये। उस वक्त वह बालक अपनी माँ के पाँव दबा रहा था। भगवान दरवाजे के बाहर से बोले– ''दरवाजा खोलो बेटा! मैं तुम्हारी माता–पिता की सेवा से प्रसन्न होकर तुम्हें वरदान देने आया हूँ।'' बालक ने कहा– ''इन्तजार करो प्रभु! मैं माँ की सेवा में लगा हूँ।'' भगवान बोले– ''देखो मैं वापस चला जाऊँगा।''

बालक ने कहा– ''आप जा सकते हैं भगवान। मैं सेवा बीच में नहीं छोड़ सकता।'' कुछ देर बाद उसने दरवाजा खोला तो क्या देखता है, भगवान बाहर खड़े थे। भगवान बोले– ''लोग मुझे पाने के लिये कठोर तपस्या करते हैं पर मैं तुम्हें सहज ही में मिल गया पर तुमने मुझसे प्रतीक्षा करवाई।'' बालक ने जवाब दिया– ''हे ईश्वर! जिस माँ बाप की सेवा ने आपको मेरे पास आने को मजबूर कर दिया। उन माँ बाप की सेवा बीच में छोड़कर मैं दरवाजा खोलने कैसे आता?'' बालक के इस उत्तर से भगवान बहुत खुश हुए।

यही इस जिन्दगी का सार है। जिन्दगी में हमारे माँ–बाप से बढ़कर कुछ नहीं है। हमारे माँ–बाप ही हमें ये जिन्दगी देते हैं। यही माँ–बाप अपना पेट काटकर बच्चों के लिए अपना भविष्य दाँव पर लगा देते हैं। इसके बदले हमारा भी यह फर्ज बनता है कि हम कभी उन्हें दुःख नहीं दे।

दिमागी कसरत

यहाँ एक महापुरुष का नाम दस बॉक्स में लिखा गया। आपको किन्हीं दो से चार बॉक्स के अक्षरों को जोड़कर नीचे दिये गये संकेत व अक्षर संख्या के आधार पर सही उत्तर की खोज करना है। उदाहरण– बॉक्स 10 व 1 को जोड़ने पर प्रश्न 3 का उत्तर मिलेगा।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
म	द	न	मो	ह	न	मा	ल	वी	य

क्रम	संकेत व अक्षर संख्या	उत्तर
1	जलना (3)	
2	महीना (2)	
3	मृत्यु का देवता (2)	
4	कीमत (2)	
5	कामदेव (3)	
6	नमस्कार, वन्दना (3)	
7	.... बत्ती (2)	
8	अभिनव, नया (3)	
9	कृष्ण का नाम (3)	
10	मानव सम्बन्धी (4)	
11	चिन्तन (3)	
12	आँख (3)	
13	'मैं' का बहुवचन (2)	
14	सीमा (2)	
15	सम्मान, इज्जत (2)	

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

आंध्र प्रदेश का अनूठा फैब्रिक डिजाइनर गाँव

कोत्तूरु

दोस्तो! आपने शायद ही कभी आंध्र प्रदेश के गाँव कोत्तूरु का नाम सुना हो। आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है यह छोटा सा गाँव कोत्तूरु। जल्दी ही यह अनजाना सा, गाँव विश्व पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने वाला है।

मेहनती और कल्पनाशील ग्रामवासी

आपको यह जानकर ताजुब होगा कि यहाँ की जनसंख्या 600 से भी कम है और साक्षरता का आँकड़ा भी चिन्ताजनक है जो मात्र 34.52 फीसदी है। लेकिन कहते हैं ना कि गुलाब की खुशबू दूर–दूर तक खुद ही फैल जाती है। इस गाँव के निवासियों की कला, मेहनत और कल्पनाशीलता इसे एक शीर्ष मुकाम तक पहुँचाने में सहयोगी बनी। पूरे आंध्र प्रदेश में एक यही गाँव है जहाँ शानदार, बिलकुल अलग और नई–नई डिजाइन वाली साड़ियाँ और ड्रेस मटेरियल बंधेज पद्धति से तैयार किये जाते हैं।

विदेशों में बनी पहचान

यहाँ के बुनकरों और बंधेज कारीगरों की अद्भुत शैली और कल्पनाशीलता से प्रभावित होकर केन्द्रीय कपड़ा मन्त्रालय ने इन्हें प्रोत्साहित करने और उनकी कला को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाने पर विचार किया। इसके लिए इन कारीगरों और कलाकारों के उत्पाद को कोत्तूरु ब्रांड नाम से वैश्विक बाजार में बेचने और इसके वितरण का निश्चय किया गया। यह अनूठा कोत्तूरु फैब्रिक अब संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, इंडोनेशिया, चीन, सिंगापुर, मलेशिया एवं अन्य देशों में विक्रय के लिए उपलब्ध कराया गया।

इनकी कला निराली

बंधेज हमारे देश में कोई नई चीज नहीं है और देश के कई राज्यों में कारीगर इसे बनाते हैं लेकिन फैशन विशेषज्ञों का मानना है कि कोत्तूरु का बंधेज सबसे अनूठा और निराला है। इसलिए इनकी कला को प्रोत्साहन देकर उनकी गरीबी को दूर करना जरूरी है। यहाँ के कारीगरों की शिकायत है कि अकसर उनके कपड़ों को कुछ लोग पोचमपल्ली कहते हैं जो गलत है। क्योंकि पोचमपल्ली तेलंगाना की बंधेज शैली है। यहाँ के कारीगरों ने इस अनूठेपन को हासिल करने में कड़ी मेहनत की है। इसके लिए कौशल, धैर्य, कल्पना की उड़ान और कठोर परिश्रम की जरूरत होती है। मात्र 28 मीटर ड्रेस मटेरियल को तैयार करने में इन्हें 5 दिन का समय लग जाता है।

देश को होगा फायदा

हस्तकला की पहचान रखने वालों और इसके कद्रदानों ने कोत्तूरु की बंधेज कला के महत्त्व और इसकी विशेषता को समझा है। उनका मानना है कि इन कारीगरों की अद्भुत डिजाइनिंग शैली विश्व के कपड़ा बाजार में भारत की छवि को मजबूत बनाएगी। यहाँ बनाए जाने वाले कपड़े सूती और सिल्क दोनों तरह के होते हैं।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

एकलव्य की एकाग्रता

एक बार एकलव्य घूमते हुए हस्तिनापुर आया। वहाँ उसने सुना कि गुरु द्रोणाचार्य धनुर्विद्या के सर्वोत्तम गुरु है। वह उन्हें ढूँढ़ते हुए उनके आश्रम पर पहुँच गया। गुरु द्रोणाचार्य उस समय कौरव–पाँडवों को धनुर्विद्या का प्रशिक्षण देने में व्यस्त थे। जब गुरु की नजर निषाद पुत्र एकलव्य पर पड़ी तो उसने तुरन्त गुरु के श्रीचरणों में साष्टाँग प्रणाम किया। शरीर पर बाघ का वस्त्र उसकी जाति का परिचय दे रहा था।

गुरु ने एकलव्य से अपने पास आने का कारण पूछा तो उसने कहा– "गुरुवर! मैं आपके श्रीचरणों में रहकर धनुर्विद्या सीखना चाहता हूँ। आपका आशीर्वाद मुझे अगर मिला तो मेरा जीवन धन्य हो जाएगा।'' गुरु धर्मसंकट में पड़ गए क्योंकि वे भीष्म पितामह को राजकुमारों को शिक्षा देने का वचन दे चुके थे। वे इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि राजकुमारों के साथ निषाद पुत्र को शिक्षा देना सम्भव नहीं हो सकेगा। कौरव पांडव भी इस बात को स्वीकार नहीं करेंगे।

वे जानते थे कि गुरु की शरण में आए शिष्य को वापस भेजना उनके धर्म के विरुद्ध है फिर भी वक़्त की नजाकत को देखते हुए उन्होंने पहले एकलव्य को गले से लगाया और कहा– "बेटा! मुझे अफसोस है कि मैं तुम्हें धनुर्विद्या देने में असमर्थ हूँ।'' इसके अलावा वे कुछ कहते तभी एकलव्य उनके चरणों में बैठकर बोला– "गुरु जी! आप मुझे अपना शिष्य चाहे स्वीकार न करें पर मैं मन से, श्रद्धा से आपको अपना गुरु स्वीकार कर चुका हूँ। मेरे कारण आपके कार्य में बाधा हो या आप धर्मसंकट महसूस करें यह मुझे स्वीकार नहीं... बस इतना आशीर्वाद दीजिए कि मैं अपना संकल्प पूरा कर सकूँ।'' गुरु द्रोणाचार्य ने उसे पुनः गले से लगाया। गुरु का आशीर्वाद लेकर एकलव्य आश्रम से बाहर आ गया।

हस्तिनापुर से दूर नहीं गया। वह गुरु के आश्रम से कुछ दूरी पर ही अपनी कुटिया बनाकर रहने लगा था। उसने मिट्टी से अपने गुरु की मूर्ति बनाई और उसके समक्ष हर दिन धनुष–बाण का अभ्यास करने लगा। अपनी योग्यता में हर दिन

अपने प्रयास एवं दृढ़ संकल्प से निखार लाने का प्रयास करता रहा।

एक बार की बात है। गुरु अपने शिष्यों को लेकर निकले तो संयोगवश उनका कुत्ता भी जाने कैसे उनसे अलग होकर एकलव्य के आश्रम पर जा पहुँचा। एकलव्य धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा था। कुत्ता उसके शरीर पर बाघ की खाल का वस्त्र देख जोर–जोर से भौंकने लगा। एकलव्य ने कई बार उसकी आवाज को अनसुना कर अपने अभ्यास को निरन्तर जारी रखने का प्रयास किया पर जब उसकी आवाज से परेशान हो गया तो उसने सात तीर एक के बाद एक उसके मुँह में इस तरह मारे जिससे उसे कोई हानि नहीं हुई पर उसका मुँह इस प्रकार बन्द हो गया कि वह बोल नहीं सका और वहाँ से भाग गया।

रास्ते में कौरव–पांडव और गुरु द्रोणाचार्य ने कुत्ते के मुँह में तीर लगे देखे तो हैरान रह गए। मुँह से एक बूँद भी रक्त नहीं बह रहा था बल्कि ऐसा लग रहा था कि किसी कलाकार ने बहुत खूबसूरती से तीरों से सजाया है। अर्जुन बहुत हैरान था उसने कहा– "गुरु जी! आप तो कह रहे थे मेरे से बड़ा धनुर्धर कोई नहीं होगा। इस तरह से तीर छोड़ने का हस्त कौशल तो मुझे भी नहीं आता।" गुरु द्रोणाचार्य भी हैरान थे। उन्होंने कुत्ते से उसी स्थान पर ले जाने के लिए कहा। कुत्ता आगे–आगे दौड़ने लगा पीछे–पीछे कौरव और पांडव। कुत्ता एक कुटिया के बाहर जाकर रुक गया। वहाँ उसी निषाद पुत्र को देखा तो उसे गुरु द्रोण ने देखते ही पहचान लिया।

गुरु द्रोण को अपने आश्रम पर देखकर एकलव्य ने तुरन्त साष्टाँग प्रणाम किया। अर्जुन ने पूछा– "क्या कुत्ते के मुँह में तीर तुमने छोड़े हैं"? एकलव्य ने कहा– "उसके भौंकने से मेरे अभ्यास में विघ्न पैदा हो रहा था तो मुझे मजबूरन ऐसा करना पड़ा।" गुरु द्रोणाचार्य ने पूछा– "तुम्हारे गुरु कौन है? जिससे तुमने इतनी कुशलता के साथ तीर चलाने सीखे हैं।" एकलव्य ने कहा– "वैसे तो ज्ञान के दाता एकमात्र भगवान ही है पर मैंने आपके आशीर्वाद से, आपके संरक्षण में ही यह सब सीखा है। मैं तो आपके श्री चरणों का दास हूँ।" और यह कहकर मिट्टी की बनाई गुरु की मूर्ति की ओर संकेत कर दिया। द्रोणाचार्य स्तब्ध रह गए। उन्होंने पहले कभी ऐसी निष्ठा और प्रतिभा नहीं देखी थी।

उन्होंने अर्जुन की तरफ देखा तो उन्हें याद आया। उन्होंने कहा था कि तुम से बड़ा धनुर्धर दुनिया में कोई नहीं होगा। उन्होंने एकलव्य की निष्ठा को देखकर कहा– "मैं बहुत प्रसन्न हूँ। अपने गुरु को गुरु दक्षिणा नहीं दोगे?'' वह गुरु द्रोणाचार्य के चरणों में बैठ गया और बोला– "आज उसकी साधना सफल हो गई और आज उसके गुरु ने शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया।''

वह हर्ष से बोला– ''आप दक्षिणा में जो माँगेंगे मुझे स्वीकार है।'' द्रोणाचार्य ने कहा– "दाहिने हाथ का अँगूठा दे सकते हो?'' एक पल के लिए वह सोच में पड़ गया कि अगर दाहिने हाथ का अँगूठा नहीं होगा तो धनुष–बाण कैसे चलाऊँगा? मेरी सारी साधना, परिश्रम, अभ्यास सब व्यर्थ चला जाएगा। मगर दूसरे ही पल उसने अस्त्र उठाया और अपने दाहिने हाथ का अँगूठा काट कर गुरु द्रोणाचार्य के चरणों में रख दिया।

गुरु की आँखें नम हो गई, दिल भारी हो गया। उन्होंने कहा– "पुत्र! संसार में धनुर्विद्या के अनेक ज्ञाता हुए हैं और होंगे मगर तुम्हारे इस महान त्याग, गुरु–श्रद्धा और अभ्यास को संसार सदा याद रखेगा। एक सच्चे गुरु भक्त के रूप में तुम्हें हमेशा याद किया जाएगा।" ऐसा कहकर गुरु द्रोणाचार्य वहाँ से चले गए। एकलव्य दक्षिणा देकर और गुरु आशीर्वाद पाकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा था।

सरिता गुप्ता
दिल्ली

रंग भरकर देखिए

जैसे जंगल कट रहे हैं और गाँवों का शहरीकरण हो रहा हैं वैसे ही कई अवैतनिक सफाई करने वाले पक्षियों के रहने की जगह कम पड़ रही है। विलुप्त होने वाले ऐसे ही एक पक्षी को देखने के लिए नीचे के खानों में लिखे नम्बर 1 में केसरिया, नम्बर 2 में भूरा, नम्बर 3 में लाल व नम्बर 4 में काला रंग भरिए।

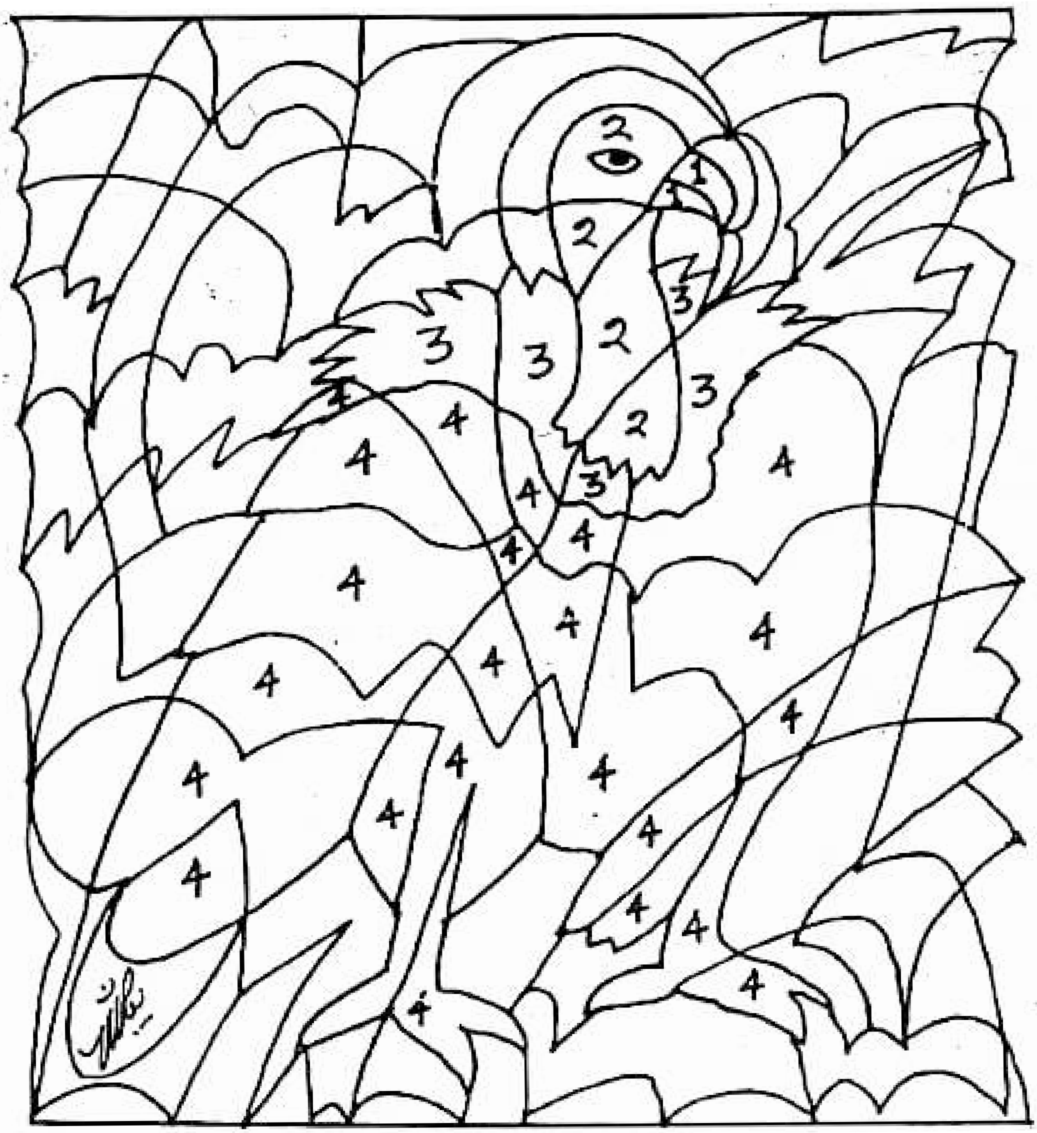

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

विश्व विरासत स्थल-3

कुतुब मीनार

कुतुब मीनार राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के दक्षिणी इलाके महरौली में स्थित है। इसकी नींव गुलाम वंश के पहले शासक कुतुबुद्दीन ऐबक ने रखी थी। सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में 1193 ई. में इसका निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ था। इसको बनवाने का उद्देश्य ऊँचे स्थान से लोगों को नमाज पढ़ने के लिए एकत्रित करना था। ऐबक ने इसका आधार तैयार करवाया और उसके दामाद इल्तुतमिश ने इसे पूर्ण करवाया था।

विश्व की सबसे ऊँची पुरातन मीनार, कुतुब मीनार की ऊँचाई 73 मीटर है और इसका व्यास 14.3 मीटर है। यूनेस्को द्वारा 1993 ई. में इसे विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया था। इस इमारत को ईंटों और लाल बलुआ पत्थरों से बनाया गया है। फिरोजशाह तुगलक ने इसकी पाँचवीं और अन्तिम मंजिल बनवाई थी। इस प्राचीन मीनार को देखने के लिए देश–विदेश से प्रतिवर्ष लाखों सैलानी आते हैं। यह इतिहास का जीवन्त स्वरूप प्रस्तुत करती है।

बच्चो, कुतुब मीनार के आसपास अन्य प्रमुख इमारतों में कुव्वत–उल–इस्लाम मस्जिद, अलाई मीनार, चन्द्रगुप्त द्वितीय का लौह स्तम्भ और सुल्तान इल्तुतमिश, अलाउद्दीन खिलजी तथा इमाम जामिन के मकबरे भी हैं। पाँचवीं शताब्दी के लौह स्तम्भ की विशेषता यही है कि इस पर आज तक कोई जंग नहीं लगा है। दिल्ली में "फूल वालों की सैर" का मेला, जो धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है, यहीं पर आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर सूफी संगीत और मुशायरों का आयोजन भी किया जाता है।

दिल्ली भ्रमण के दौरान पर्यटक कुतुब मीनार देखने जरूर आते हैं। यहाँ पिछला एक हजार वर्ष पुराना इतिहास आँखों के सामने सजीव हो उठता है।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

मेरा खिलौना

उर्विल और आशना दोनों भाई–बहिन थे। उर्विल बड़ा और आशना छोटी थी। उर्विल अकारण ही आशना को तंग करता। आशना जब उसे कुछ कहती तो वह उसको झिड़क देता। मम्मी को यह सब अच्छा न लगता। वे उर्विल को समझातीं– ''बेटा, छोटी बहिन से लड़ाई–झगड़ा नहीं करना चाहिए। उसके साथ स्नेह का व्यवहार करना चाहिए।'' उसके साथ स्नेह का व्यवहार करना चाहिए। यह सुनकर उर्विल हँसने लगता। मम्मी चुप रह जाती।

एक दिन पापा बाजार से दो खिलौने लाए। उड़ने वाला जहाज उर्विल के लिए और पटरियों पर चलने वाली रेल आशना के लिए। आशना उस समय सो रही थी। रेल बहुत सुन्दर थी। उर्विल ने खिलौने बदल लिए।

बाद में आशना पापा से बोली– ''पापा! आप जानते हैं मुझे जहाज वाला खिलौना अच्छा नहीं लगता। फिर भी आप यही लाए।'' पापा बोले– ''बेटा! तुम्हारी तो रेल थी। जहाज तो उर्विल का है।'' यह सुन आशना उर्विल से जाकर बोली– ''भइया! यह अपना जहाज लो और मेरी रेल मुझे दो।'' उर्विल बोला– ''नहीं, तुम्हारा यही खिलौना है।'' इस पर आशना ने कहा– ''पापा

कहते हैं मेरा खिलौना रेल है।'' उर्विल को गुस्सा आ गया। उसने रेल जोर से फेंक कर मारी। रेल की पटरी आशना की आँख के ऊपर जा लगी। खून बहने लगा। घाव गहरा हो गया। आशना को अस्पताल ले जाना पड़ा। जहाँ उसे तीन टांके आए।

खून बहना तो बन्द हो गया लेकिन अगले दिन आशना को जबरदस्त बुखार हो गया। जिस कारण उसे वहीं भर्ती करना पड़ा। दो दिन तक आशना का बुखाार नहीं टूटा। उसके शरीर में कमजोरी आ गई।

आशना के बिना उर्विल को अब सारा घर सूना–सूना सा लगने लगा। वह उदास हो गया। आशना का लहूलुहान चेहरा जब उर्विल की आँखों के सामने आता तो आँखों के साथ–साथ उसका मन भी रोने लगता। एक दिन उसने मम्मी से पूछा– ''मम्मी! आशना कब ठीक होगी?'' मम्मी ने उसे प्यार किया और बोली– ''बेटा! आशना जल्दी ही ठीक हो जाएगी। तुम मन छोटा न करो।'' मम्मी का दुलार उसे और भी रूला गया।

आशना का बुखार धीरे–धीरे उतरने लगा। एक दिन उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई। आशना के घर आते ही उर्विल उसे वहाँ ले गया जहाँ उसने अपने सभी खिलौने इकट्ठे कर रखे थे।

खिलौने दिखाते हुए वह बोला– ''आशना! आज से ये सभी खिलौने तुम्हारे हैं।'' आशना ने पूछा– ''लेकिन तुम किससे खेलोगे?'' उर्विल बोला– ''मैं तुम्हारे साथ खेलूँगा। मेरा खिलौना तुम हो।''

यह सुनकर माँ की आँखें भर आई। उर्विल के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए वे बोली– ''शाबाश, बेटा! भाई हो तो ऐसा।''

राजेश अरोड़ा
गजसिंहपुर (राजस्थान)

ईसा मसीह के प्रेरक संदेश

- **प्रेम करें–** हमें संसार में सबसे प्रेम करना चाहिए। यहाँ तक कि हमें अपने शत्रु से भी प्रेम करना चाहिए। प्रेम और सहानुभूति से हमारा जीवन सरल बनता है।
- **हिंसा न करें–** हमें कभी भी हिंसा नहीं करना चाहिए। सदैव अहिंसा का पालन करना चाहिए क्योंकि हिंसा से मानवता का विनाश होता है।
- **पाप न करें–** हमें कभी भी भूल कर पाप कर्म नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे हमारा यह जन्म ही नहीं बल्कि अगला जन्म भी नरक बन जाता है।
- **सच बोलें–** सच बोलने से परमात्मा हमारे अन्दर निवास करता है। हमारा आत्मिक विकास होता है। इसलिए हमें सदैव सत्य बोलना चाहिए।
- **मदद करें–** हमें सदैव असहाय व कमजोर लोगों की मदद करनी चाहिए। यदि हमारे पास दो रोटी हैं तो एक रोटी किसी भूखे को दे देनी चाहिए।
- **खुश रहें–** हमें प्रत्येक परिस्थिति में खुश रहने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि जो हो रहा है वह सब ईश्वर की इच्छा से हो रहा है।
- **लोभ न करें–** लोभ एवं लालच में हमें हमेशा पछताना पड़ता है। यहाँ तक की कुछ अपना भी गँवाना पड़ता है। इसलिए हमें कभी भी लोभ नहीं करना चाहिए।
- **धर्म ज्ञान–** हमें अपने धर्म का ज्ञान जरूर होना चाहिए क्योंकि धार्मिक मार्ग पर चलकर ही हम सत्यवादी और परोपकारी बनते हैं।

हरप्रसाद रोशन
हल्द्वानी (उत्तराखंड)

पढ़ो और जीतो

यहाँ दिये दस प्रश्नों के उत्तर इसी अंक की सामग्री पर आधारित है। आप पत्रिका पढ़ें और उनके सही उत्तर खोजकर एक कागज पर लिखें।अपना नाम, कक्षा, शहर व मोबाइल नं. भी इस पत्र पर लिखना है । उसका फोटो हमें व्हाट्सएप नं. 9351552651 पर **दिनांक 31.12.23** तक भेजें।

1. मायरा, तितली और हनी बी, इनमें से कौन अधिक समझदार निकला और क्यों ?
2. ईसा मसीह का कौनसा संदेश आपको सबसे अच्छा लगा?
3. पॉपकार्न.............. की मजबूती के लिए अच्छा भोजन है। रिक्त स्थान भरो ?
4. सलोना तैरना क्यों नहीं सीख सका ?
5. गुरुजी ने संस्कार की शिक्षा कैसे दी ?
6. क्या करने पर मछुआरों को नींद आ गई ?
7. शिक्षक वीरेन्द्र कुमार ने क्या विशेष काम किया ?
8. राजा महेन्द्र प्रताप सिंह के जीवन का कौन सा पक्ष सबसे अधिक प्रभावित करता है?
9. गन्ने से जूते बनाने का आविष्कार किसने किया?
10. 'मेरा खिलौना तुम हो।' यह वाक्य किसने और किसे कहा?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) अर्जुन (ब) युधिष्ठिर (स) गान्धारी (द) द्रोणाचार्य (2) वेदव्यास (3) नारायणी सेना की (4) दायें हाथ का अँगूठा (5) कुरुक्षेत्र (6) गांधारी ने (7) विदुर (8) अर्जुन–सुभद्रा (9) महाभारत (10) युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव।

अन्तर ढूँढ़िए

(1) लड़के के जूतों का रंग अलग (2) बॉटल का आकार बड़ा (3) कुत्ते की जीभ गायब (4) लड़की के पेंट का रंग अलग (5) सेव अतिरिक्त (6) केले का आकार बड़ा (7) चिड़िया अतिरिक्त (8) लड़की की एक आँख गायब

दिमागी कसरत

(1) दहन (2) माह (3) यम (4) मोल (5) मदन (6) नमन (7) मोम (8) नवीन (9) मोहन (10) मानवीय (11) मनन (12) नयन (13) हम (14) हद (15) मान

बूझो तो जानें

(1) हिमालय (2) गंगा (3) कश्मीर (4) बर्फ (5) अखरोट

उलझन कैसी ?

चित्र नम्बर 8 में सबसे ज्यादा 12 गोले एवं चित्र नम्बर 10 में सबसे कम 9 गोल बने हैं।

वर्ग पहेली

1 डॉ	रा	2 जे	न्द्र	प्र	3 सा	4 द	
ल्फि		ब्रा			5 व	र	6 द
7 न	8 ख		9 म	10 चा	न		ना
	11 प	12 र	च	म		13 कं	द
14 शी	त	का	ल		15 वि	धा	न
घ्र		16 ब	ना	ठ	ना		
17 गा	ज				18 श	19 य	20 न
21 मी	रा	बा	ई		22 क	म	ल

सुडोकू

9	5	7	6	1	3	2	8	4
4	8	3	2	5	7	1	9	6
6	1	2	8	4	9	5	3	7
1	7	8	3	6	4	9	5	2
5	2	4	9	7	1	3	6	8
3	6	9	5	2	8	7	4	1
8	4	5	7	9	2	6	1	3
2	9	1	4	3	6	8	7	5
7	3	6	1	8	5	4	2	9

आयशा लोहिया, कक्षा 6, राजसमन्द

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 9, दिल्ली

काव्या बछावत, बीकानेर

अमित कुमार, कक्षा 2, बीकानेर

दृष्टि माहेश्वरी, कक्षा जूनियर केजी, चित्तौड़गढ़

प्रियान्शी, कक्षा 5, उदयपुर

माँ

जो हमें सब खुशियाँ देती हैं
हमारे साथ हर खुशी बाँटती है
उसे हम माँ कहते हैं।
जो खुद गरीब होती है
मगर बच्चों को अमीर बनाती है
उसे हम माँ कहते हैं।
हमें अच्छा खाना खिलाती है
खुद रूखा-सूखा खाती है
उसे हम माँ कहते हैं।
हमारी हर इच्छा पूरी करती है
चोट लगने पर सहलाती है
उसे हम माँ कहते हैं।

काव्य तातेड़, कक्षा-8
कुँवारिया (राजसमन्द)

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें
मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

विश्व कम्प्यूटर साक्षरता दिवस

तकनीक की जानकारी
सुविधाजनक जिन्दगी हमारी

दिलीशिमा

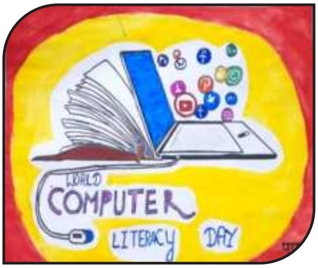

पायल

मोनिका

सपना

अनुकुंवर

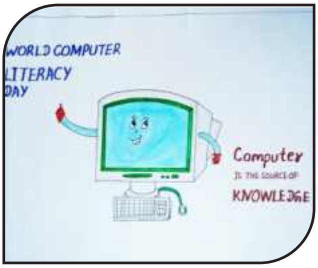

माया

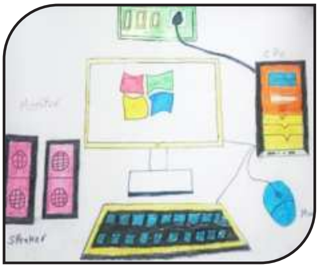

कुमारी

कोमल

पायल मेघवंशी

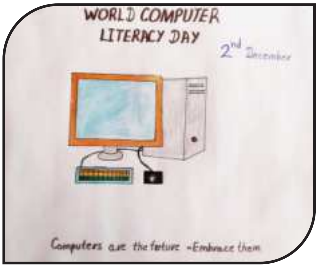

नीतू

विनिता

: सामग्री सौजन्य :

आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- श्रीनगर, अजमेर

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

गन्ने और प्लास्टिक से बने फुटवियर

सूरत के भाई-बहन पार्थ और करिश्मा दलाल इकोफ्रेंडली जूते बना रहे हैं। ये जूते गन्ने के बचे हुए कचरे और प्लास्टिक से तैयार कर रहे हैं। फॉर्मेसी की पढ़ाई करने के बाद पिता और बहन के साथ पर्यावरण को सुरक्षित बनाने के लिए कचरे और प्लास्टिक से जूते बनाने का ख्याल आया। इन्हें रिसायकल किया जा सकता है। पार्थ अब तक 400 जोड़े जूते बनाकर बेच चुके हैं।

दुनिया की सबसे बड़ी रोटी

भीलवाड़ा में 130 किलो आटा और दस किलो मैदे से 185 किलो वजनी दुनिया की सबसे बड़ी रोटी तैयार की गई। रोटी तैयार होने में करीब पाँच घंटे लगे। भीलवाड़ा शहर के हरिसेवा धाम में सुबह सवा ग्यारह बजे घी और कपूर से अग्नि प्रज्ज्वलित की गई। बीस फीट के स्टील के बेलन से पाँच जनों ने रोटी बेली। दो हजार ईंटों से तैयार भट्ठी में एक हजार किलो कोयले पर रोटी सेकी गई। शाम पौने पाँच बजे रोटी बनकर तैयार हुई।

सी बीच साफ करेगा रोबो

पीपलोद (गुजरात) स्थित सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के विद्यार्थियों के बनाए स्वीप रोबो ने 50 लाख का पहला इनाम जीता है। यह रोबो समुद्री किनारों को साफ करेगा। बैटरी से चलने वाले इस रोबो के आगे सेंसर लगाया गया है। यह सेंसर खुद ही कूड़ा डिटेक्ट करता है। आगे कलेक्शन क्लोव्स है, जो कूड़ा उठाकर पीछे बनाए गए दो कूड़ेदान में जमा करते हैं। रोबो के बीच एक और सेंसर सिस्टम है जो प्लास्टिक और नॉन प्लास्टिक कूड़े को अलग-अलग कूड़ेदान में जमा करता है।

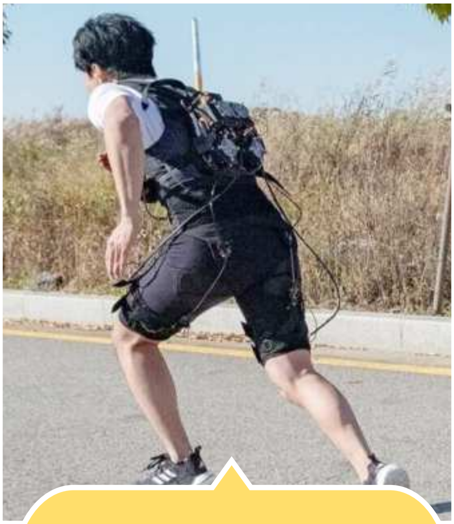

सूट जिसे पहनने पर ज्यादा तेज दौड़ सकेंगे

दक्षिण कोरिया के चुंग आंग यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने अल्ट्रा लाइट एक्सोसूट बनाया है। यह धावकों को ज्यादा तेजी से दौड़ने में मदद करता है। इसका वजन 2.5 कि.ग्रा. है। इसे पहनने के बाद रेसर 200 मीटर की रेस में सामान्यतः लगने वाले समय में से दो सेकंड तक बचा सकता है।

बेंगलुरू के छात्र ने बनाई स्मार्ट चम्मच

17 साल के छात्र आरव अनिल ने काँपते हाथों वाले लोगों के लिए स्मार्ट चम्मच बनाई है। इसकी सहायता से पार्किंसन के मरीज आसानी से खाना खा सकते है। इसमें माइक्रोकंट्रोलर, सेंसर, मोटर व 3 डी प्रिंटर लगा हुआ है। यह वाटरप्रूफ है और इसे धोया भी जा सकेगा। इसका क्लीनिकल ट्रायल पूरा होने के बाद मार्केट में उतारा जाएगा।

पैर की तीन साइज तक फिट बैठते जूते

30 वर्षीय सत्यजीत की फुटवियर स्टार्टअप कम्पनी अरेटो ने ऐसे जूते तैयार किए हैं जो बच्चों के पैरों के साथ-साथ बढ़कर तीन साइज तक फिट हो जाते हैं। जिस गति से कली फूल बनती है उसी तकनीक का प्रयोग उन्होंने जूतों के सोल में किया। इसके उस हिस्से में थ्री डी फैब्रिक का प्रयोग हुआ है। इससे जूते बच्चे के पैर के अनुसार खुलकर बढ़कर फिट होते हैं।

Science of Living

Sweet Voice

Jeevan Vigyan

Q. How do you feel when someone scolds you?

A. I fee bad.

Q. How do you feel when someone call you lovingly?

A. I fee good.

Q. How do you feel when a dog barks?

A. It feels jarring to my ears.

Q. How do you feel when cuckoo sings?

A. It feels sweets.

Q. How do you feel when humming bees fly around the flowers?

A. It feels sweets.

Q. How do you want your voice to sound like?

A. I want my voice to sound sweet.

Q. Which sound do you want to mimic, to make your voice sweet?

A. To make my voice sweet, I want to mimic the sound of cuckoo and bee.

LET US PRACTICE

Guidelines: Sit in Sukhasan with crossed legs. Do not shake or move the body. Fill the lungs with air by breathing in slowly. Thereafter, breath out and hum like the bee through the nose. Keep the mouth closed.The humming voice is called 'Mahapran Dhwani'. Practice this three times a day in the beginning. Gradually increase the practice to nine times a day. By practicing Mahapran Dhwani the voice becomes sweet. There are many other benefits to gain too.

We should always say what's true,
Even when it's hard to do,
Honesty is always right,
Morning afternoon, and night.

Tell the truth in all you say,
Trust and friends are built this way,
We should always be polite,
Speaking nicely, such delight,
Being kind is always right,
Morning, afternoon, and night.

मजेदार होता है पॉपकार्न

जब आप फिल्म देखने थियेटर जाते हैं तो इंटरवेल में पॉपकार्न खरीद कर खाते ही हैं। किसी पिकनिक स्पॉट, मेले या बाग–बगीचों के आसपास भी पॉपकार्न की दुकानें मिल जाती हैं। जहाँ 'टाइमपास' करने के लिए पॉपकार्न खरीद कर खाए जाते हैं।

पॉपकार्न बच्चों से लेकर बड़ों तक की पसन्द है। पाचन तंत्र के लिए यह अच्छा खाद्य है। फाइबर होने से यह पेट साफ रखती है तथा कब्ज से निजात दिलाती है। पॉपकार्न को आप साधारण वस्तु न समझें। यह पौष्टिकता का खजाना है। इसमें विटामिन बी, बी3, बी6 होता है, जिससे शरीर में ऊर्जा बनी रहती है। पॉपकार्न एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है। इसमें विटामिन्स के अलावा मैग्नीशियम, मैगनीज जैसे खनिज भी होते हैं। इसमें पॉलिफिनॉनिक यौगिक होता है जो कैंसर की आशंका घटाता है। पॉपकार्न में आयरन भी होता है, जिससे खून की कमी दूर होती है।

पॉपकार्न उनके लिए विशेष तौर पर लाभदायक है जो मोटापे के शिकार हैं। इसमें कैलोरी काफी कम होती है। इसे खाने से पेट भरा–भरा लगता है तथा देर तक भूख नहीं लगती। पॉपकार्न डायबिटीज के रोगी भी खा सकते हैं। फाइबर होने से यह रक्त में शर्करा तथा इंसुलिन के लेवल को नियन्त्रित करता है। पॉपकार्न दिल की बीमारियों से भी बचाता है। यह कोलेस्ट्रॉल भी नियन्त्रित करता है। हड्डियों की मजबूती के लिए भी यह अच्छा भोजन है।

खास तरह की मक्का से पॉपकार्न को कई तरह से बनाया जा सकता है। घर में इसे प्रेशर कुकर में या माइक्रोवेव में भी तैयार किया जा सकता है। जायका बढ़ाने के लिए मक्खन, नमक और मसाला मिला सकते हैं। गर्मागर्म पॉपकार्न खाने का मजा ही कुछ और है।

माना कि आपको पॉपकार्न बेहद पसन्द है लेकिन अति हर चीज की बुरी होती है। इसे सीमित मात्रा में ही लेना चाहिए। पॉपकार्न की पैकिंग उसे कुरकुरा बनाए रखती है। यदि खुला छोड़ दिया जाए, तो हवा या नमी लगने से खाने में मजा नहीं आता।

दुनिया में प्रसिद्ध होने की चाह में अकसर बहुत सारे लोग विचित्र कारनामे करते रहते हैं। ऐसा ही कारनामा किया है– अमेरिका के डेविड रश ने। डेविड सीरियल वर्ल्ड रिकॉर्ड ब्रेकर हैं, जो आए दिन अजीबो गरीब रिकॉर्ड अपने नाम करते रहते हैं। अब उन्होंने स्टोव पर रखे गर्म पैन से उड़ते पॉपकार्न को कैच कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम किया है। इस दौरान उन्होंने दोनों हाथों से एक मिनट में 36 पॉपकार्न कैच किया। इसके पहले यह रिकॉर्ड अमेरिका के ही अश्रिता फुरमान के नाम था। फुरमान ने एक मिनट में 34 पॉपकार्न कैच किये थे।

डॉ. विनोद गुप्ता
मन्दसौर (मध्य प्रदेश)

ब्रेक
चित्रकथा-
गांव जाने पर हरीश पहली बार घोड़े पर चढ़ा-
..अपना ध्यान रखना बेटा, कुछ पूछना हो तो पूछ लो..
..घबराओ मत काका..मैंने शहर में कार-स्कूटर खूब दौड़ाए हैं..
..घोड़ा दौड़ाना क्या मुश्किल पड़ेगा.. तुम बेफ़िक्र रहो..
जरा आगे बढ़ते ही-घोड़ा बिदक गया-
बाप रे..!
..मर गया..यह तो बेकाबू होकर दौड़ रहा है...
..काश..काका से पूछ लेता..इसके ब्रेक कहां हैं?..
संकेत गोस्वामी, जयपुर (राज.)

किड्स कॉर्नर

जन्मदिन की बधाई

05 दिसम्बर

इक्षु दर्शनप्रिय जैन
पनवेल (नवी मुम्बई)

06 दिसम्बर

चेष्टा राठी
निम्बाहेड़ा

06 दिसम्बर

अर्पित शर्मा
चित्तौड़गढ़

09 दिसम्बर

अदिति चौखड़ा
अहमदाबाद

22 दिसम्बर

तान्या कौशिक
बीकानेर

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत अमृत महोत्सव के गौरवशाली अवसर पर
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
की प्रस्तुति
अणुविभा
75
अणुव्रत आंदोलन
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत गीत महासंगान
श्रेष्ठ भारत का शंखनाद
18 जनवरी 2024
एक विश्व
एक स्वर
मानव धर्म मुखर
केन्द्रीय समन्वय कक्ष सम्पर्क सूत्र
अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत
97372 80171
93746 13000
98254 04433
93747 26946

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

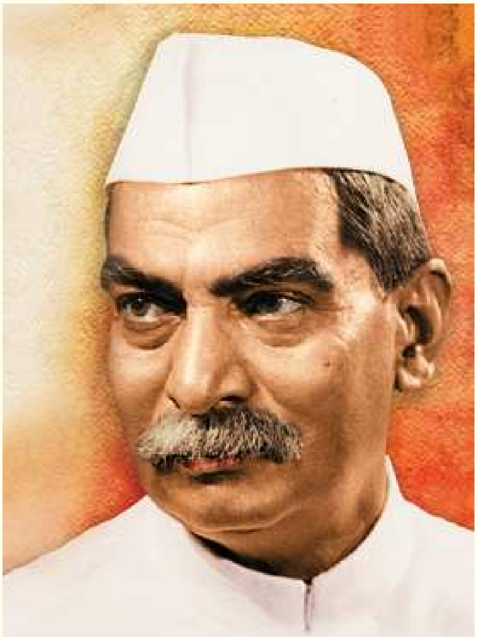

"वर्तमान हमसे अतीत की अपेक्षा भी अधिक निष्ठा और बलिदान माँग रहा है। मैं आशा और प्रार्थना करता हूँ कि हमें जो अवसर मिला है, हम उसका उपयोग करने में समर्थ हो सकेंगे। हमें अपनी सारी भौतिक और शारीरिक शक्तियाँ अपनी जनता की सेवा में लगा देनी चाहिए।"

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

जन्म : 03 दिसम्बर 1883

निधन : 28 फरवरी 1963

भारत के प्रथम राष्ट्रपति एवं महान भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी थे। वे भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के प्रमुख नेताओं में से थे और उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अध्यक्ष के रूप में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय संविधान के निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्होंने भारत के पहले मन्त्रिमंडल में कृषि और खाद्यमन्त्री का दायित्व भी निभाया था। हिन्दी के प्रति उनका अगाध प्रेम था। उन्होंने लेखन और सम्पादन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया। उन्हें भारत सरकार द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया।